

Project Report
Dept of Assamese, Session: 2022-23
Lakhipur College, Lakhipur

SL No	Name	Roll No	Semester
1	Milika Hajong	UA-211-101-0095	4 th Semester
2	Madhumita hajong	-0144	4 th Semester
3	Kankana hajong	-0073	4 th Semester
4	Mukesh choudhury	-0112	4 th Semester
5	Madhumita hajong	-0084	4 th Semester
6	Moriom Begum	-0107	4 th Semester
7	Lipika Barman	-0082	4 th Semester
8	Pratibha Barman	-0137	4 th Semester

ଲକ୍ଷ୍ମୀପୁର ମାଧ୍ୟମିକ ବିଦ୍ୟାଲୟ ଲକ୍ଷ୍ମୀପୁର

କାଳେ : = ଶ୍ରୀଜନେଶ୍ୱର ମହିତ୍ୟ
(ASM - SE - 4014)

କଣ୍ଠିଲୀ : = ଚିତ୍ରାବ ଆତ୍ମାର

ଅନୁତକ୍ତୀ

ନାମ : - ପ୍ରତିଭା ବନ୍ଦା
ଶ୍ରୀମି : - ଚତୁର୍ବ ମାତ୍ରାଜିକ
ଲକ୍ଷ୍ମୀପୁରନ୍ଦ : - ୨୧୦୧୩୨୬୫
ଶୈଳଗନ୍ଧ : - UA-211-101-0137

ମୋର ନାମ ଅଠିତାର ମୋର ଦେଉତାର ନାମ ସତର ଆଖମାଥ
ନାମ ମାଲଣ୍ଡି । ଆମ ଚିନିଙ୍କାନ୍ତ ପରିଶାଳନାତ । ଦେଉତାର
ମୁକ୍ତାରେ ଏହାର ମେଘାବୀର ଚାଲି ଦାରେ ଆଖ ଆଶ୍ରାମିତିଷଜ
ଏଥର ଜାଇଁର ପବା ଆରି ତାମ କୁ ଉଠାଇ ଏଥର ଘଟଲୁ ।
କୁ ମୁକ୍ତାର କରୁଥିବ ଶାହୋ । ମୋର ରାତି ଡିଲିଯୁ - ଭାଇତ
ଚାଂଚି - ପାଇଁ ଦାରୁର ମାନ ଗୋଟିଏ ଅନନ୍ତ ଶୁଦ୍ଧିର ଆମାର
କୀଟାନ ଟୋଳ ଛାଲିଲା । ଶାଂଚି - ଫୁର୍ତ୍ତିଲ ବୀର କାଳେ -
ଅଠିନିର ବରଣିଲେ ଚାଲ ଆହୋ ବ୍ୟାଗି, ଭାବୁ ହୋଇ
ଏହିର ଦେଉତାରେ କରୁଥିବ ପରେ ଆଖମାରିଲା - କେତେ ଆର
ଆକ ଫୈରାଏ ଅଷ୍ଟିର ବର୍ଣ୍ଣିଲେ କରୁଥିବ ପିଛିର କର୍ତ୍ତାର
ଶୁଦ୍ଧ । ମିଳୁ ବିଧି ଇଣିଏ କରୁଥିବ କର୍ତ୍ତାରେ ଦେଉତା
ହୁଏଲା । ଏହି ଆଖମାର ମିଳ ଲାଗି ଚିତ୍ତା କାଲି ଶାହୋ ।
ଦେଉତା - ହୁଏଲା ଆଖମାର ମାଲଣ୍ଡିଲାଜାର ।
ସେତ ଆର ମୋକ୍ଷାବୀର ହୋଇଯେବ ଲାଜ - ମିଳୁ ଦେଉତା - ଏ
ଆବଶ୍ୟକ ମାରଣିଲା । ଅନର୍ଥ ଦିନପାଇ ପାଇ ରିହାଇ ।
ଦେଉତା - ହୁଏଲା ନିହତ ଆମ୍ବାଜିଶାମ ନି ବାଲିଲ,
ଲାଜ ଲି ଲାଜ ମହି ଲାଜର ଆରିକୁ - ଖୁଲେଲା ଅଧିକ
ପରିଶ୍ରବ୍ୟାଳେ ଆଖଚ ଶିରିରେ ଶିଖାର ଟୋ - ଆ - ଲାଜାର ଆଖିର
ପାଇବେ ମା - ପଥତ ହିତ୍ତିର ପାଇଲିବୁକି ।

तीर्थ यामान डाक्टर अण्णितु कृष्णराजा - यामान देवारे प्रस्ताव
 इह मुख्य आद आम उत्तेश्वरम् अवठ । ३२ इन्द्रला - द्वैतो
 ग्रनथवल देवारे काला मातृ चलिया लगा - हैरू । काला
 र्हुपा दीर्घित शाखा आमाश लक्ष्मि - वहाँ कृष्ण बाहुल
 शृंग । आख इत्ती ब्रह्म एवं मास अन्धुर्ण उद्य विश्वाल ।
 विश्व राज्ञ माव २'ले शाख लक्ष्मि लक्ष्मि विष्णु विष्णु भौतिक । लाल
 ब्रह्मज्ञ लो । आख इत्ती लक्ष्मि विष्णु विष्णु विष्णु भौतिक । लाल
 लाल माला दयुअवधी है आहे लक्ष्मि - माख सभा - प्रधा-
 नाम रामामाय वार्ष्ण्य आहो । ३४ एवं एवं द्वैतो द्वैतो
 आहे है शालाते इत्ती एवं द्वैतो द्वैतो द्वैतो द्वैतो
 मालिका जान राखा लोन आलि मातृ लोक बहु याद
 लेजा ठंडे लोमावीलो - आमाश पवार लगा - अलप दृष्टि
 है । मा - दयु अवधी उत्ती विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु
 आद शृंग एवं अवधी लोकीला, आविष्ट लोक लगाव
 नोट्टा फिलेओ लोन्टो आविष्ट द्वैतो द्वैतो द्वैतो, एवं
 एवं एवं द्वैतो द्वैतो द्वैतो द्वैतो माई आविष्ट आविष्ट आविष्ट
 आविष्ट लोमावीलो - आविष्ट द्वैतो द्वैतो द्वैतो द्वैतो
 द्वैतो द्वैतो द्वैतो द्वैतो द्वैतो द्वैतो द्वैतो द्वैतो
 द्वैतो द्वैतो द्वैतो द्वैतो द्वैतो द्वैतो द्वैतो द्वैतो द्वैतो
 द्वैतो द्वैतो द्वैतो द्वैतो द्वैतो द्वैतो द्वैतो द्वैतो द्वैतो
 द्वैतो द्वैतो द्वैतो द्वैतो द्वैतो द्वैतो द्वैतो द्वैतो द्वैतो

एतर्देश आठ मा लिपाती झोड़ अह प्रति । काँडे
 ज्ञान ले लाखिलो । वासा चिंम राम रामिराम
 वरुमानल अगमुख जाणे तामार धरवनिष्ठ रीदा रामिराम
 दूसा आठिल दूसराधात लालिथार्ग का थाटे । काँडे
 उ ईरु दूसराटे वासा वा रीदा अह दास ते राजाल
 जाल एजनी दूसरास लालित आमार धरवनिष्ठ
 जाल सेव दूसरु दूसराटे वालिन अस अह रामिराम
 वाग्यास एन अउ अना शासु । ज्ञान आर्थलेजालेग
 सास जारू दूसरास शन व्यलि ऊ लार्हर्डे वलप वलपहि
 बाकुकार्ड रीदा अना आसु दूसरास लेवारू चालि माट्य
 एवनी आठिल आहे वल्ला दूसरास लेवारू चारू आस्सा
 वला द्वारा तो जात अर्हत मा ज्ञानित नी वरु उभाव
 आठ वला वासमानी छायाली द्वारा किंवा दूसराटे आस्त
 वाहि वालि आहे । मा वधारु दृष्टिरु असुकार्ड
 दूसराली द्विध अठवाउ एवलि वास उद्घातू येन
 उभाव वला आर्हतिया इल, दूसराली द्विध जासहाल
 रुप आउद्यारू फिरुतू नारू दियारू रुपारू उभाव गजा,
 आधे वास उर्वलार्हर्डे उभाल, दूसराल विजाविल फिरु
 काउनारू आहे । मा वध ज्ञानित द्विध, आठिल द्विध
 दूसराली द्विध रुपारू द्विध नारू दियारू इल,

याच मर्हि माझा घराव डिजवली आमार्ह याये। ताच अलप निष्ठ
 असेको अर्ह द्या आकुलातय मात्र गत अर्हाय कंसा पुली मात्रहि
 थारे। मांजाले अर्ह धूटाटोव लासउ एक तिक्कु उचक्का
 जले त्रात इवा निर्मात नार्ह। याच मांजाले घराव निष्ठ
 आमार्ह एक अतर्कात्य लाहिलो- असर दाव असी अतिथि
 पुढा रन्ह शर्ह घरावाहि वालोरि दुष्परिया- घराव जामार्ह देखा
 आर्हियाओ अर्ह थारे आकुलो लेला जावात आवाह
 शार्ह लडा-लडा डेवुस नववक आकुलो लेला जावात अस्त्रियि
 काळ आमार्ह माव- अतुष्ठत असेल लड्या-दुधी। म्याव मात्र
 लाल आमार्ह माव- अतुष्ठत असेल लड्या-दुधी। आसि आचे आस याद
 लामार्ह माव- दिला देखि- लाचार्ह अस्त्रि अस्त्रि आचे आस याद
 लाल दुधी देखार्ह उमान। निर्मात निर्माता- निर्माता रन्ह रन्ह
 निर्माता दिक्कु द्युस अद्यामार्ह- नकामिलो। लाति रायक
 राहत देखिले दुष्पिल असेही नाला- दिला- दिला देखि आविष्टा-
 आस रुलेही पुढा- निर्माता- निर्माता याम दिक्कु पुढा-
 योद्याव शिष्टत मर्हि शिष्ट माद मात्रिर दीपिलो- दिक्कु मार्ह
 आस लापाय मर्हि दीपिलो- लाति लापाय लापाय दात
 चाले अतिथि अर्ह आचे दिक्कु शर्ह उचक्कत असाहि लालक्कि
 असाहि लाल नाशुर इयतो- लातिते शुशुर रुला। दिक्कु मार्ह
 असाहि लाल नाशुर लालक्कि असाहि असाहि असाहि

जीवांग थारा औसपाई ताँड़ि शाव ताष्ठा। अन दृष्टि दृष्टि
 दोमिलो शहे। बेकुल बोल्हा दीर्घा शाविम गाँड़े देते ता
 दुकुद्यास खिड़त एविया मा दुकाल। राँड़ दृष्टि भावभीया
 हु पलिलो निकत दुकितल तङ्ग नग शुशिरीत शाव दोलो
 हाँ। उ एविया ब्रह्म बोल वक्तु शेजाइ आदृ ओपाणिं दुकाल
 अलण। एवर्कं दिन वापि पाव न आदृ वक्तु बोल मा
 दुकुद्यास दिन दिलाई वाव आसत्ते चाहिल। आध अनर्हा
 ला दिमान दिन आदृ शाविय अविदिल। मा-दुकुद्यास पिछु
 देव दिव मान बोलो दोमानीटेत याँत्र नजलेत नव्हें निर्वक्त
 दुर्द वक्तु दिल थाला-प्रवाहित। एवर्कै प्रविदिल बेहा शावा
 देव आदृ दोमानीटेत प्रवा-उलाँ याँ आध बर्किटा-प्रवाहित
 घर आदृ आदृ न दृ दृष्टि वाल आध आदृ। दिव वाल आध
 आदृ शावित्ते उचाँ अविव वाति वर्क दुकाल दोला-
 एवर्कादे नायाविलो अनजत। आध वाति एविव आवाद्या
 वाँचिल द्रेवदिव वाति दुकाल दोल दोलोन द्याव
 आध आदृ परे वाँ एलव नदाव देव देव जार्वयाव
 आदृ आव दोला नाहे जेह दोला दोल-माँड वाला वाल
 उलाँ दाँल आलप आकुलाह देविया दोला-सात्र
 दोलाली येव वाहि आदृ दुकाल-दोल आव्यात। एव
 आध अलण अलेत याँत्र देव दुकाल दोल आव्यात। एव
 दिवित येव आव्याल,

जपक मर्हि दुर्गाठारे लोक याई हृषि ना विद्याल
 मात्रलेखाले आज अर्के लोक लोक आई ह्याकृत्यास लो
 पर्वल क्षिण्यामार्ह शही देखायारे द्विल लोलो द्विकलंग
 अभाव द्विल हुण्डारे अविभव देखायारे द्विल लोल
 तिथा द्विल लोल मर्हि उन्हा मार द्विल उन्हान दिन विशान
 द्विल असी लोहा एवं घटाख आज द्विल लोल रहेतार
 लोहा मालिकारे आहेल, जो लेख लोलिकारे द्विल आहेल
 शिता अलिकारे अथवा शिता जळावृद्धिशृङ्खल
 एवं लोहाली इति । तात्प विद्युत लोहार्ह दाखलावर्ह उल्ल
 द्विल लोहाली शिता विता शिता लोहाली शिता विता
 शिता लोहाली शिता विता शिता लोहाली शिता विता
 शिता अवश्य अवश्य अवश्य अवश्य अवश्य अवश्य अवश्य अवश्य
 अवश्य अवश्य अवश्य अवश्य अवश्य अवश्य अवश्य अवश्य अवश्य

ଏହିର ଅଣ୍ଡାଚାତ କବିତା ଲାଗୁକାଳ ଫଳର ରୀତିରେ ଆମାଦି-
ବାର୍ଷି ସଥର ପରା ଓଳାର୍ ପିନ୍ଧାଜାଲର ଫୁଲାଟୋ କରିଯାଏ ଲାଙ୍ଘବଢ଼ିବା
କାହେ । ବ୍ୟାକ୍ ଲୋଭିଯାଇ ବେଳାର୍ ଫୁଲାଟୋ କ୍ଷେତ୍ରର କିମ୍ବା ।
ଫୁଲାଟେର ଶୁଦ୍ଧାଟେ କ୍ଷିତିଜ ଚିମିନିର ଦ୍ଵାରା ଦେଖିବାରେ କବିତାର
ଦିକ୍ଷା ରୀତିରେ ଆଖିବାର ଏବଂ କବିତାର ପରିପାଦାର ଏବଂ ବ୍ୟାକ୍ ବ୍ୟାକ୍
ଲାଗୁ କାହିଁ କାହିଁ ଲାଲମ ହାଏ କି ଯାଏ
କାହେ କରିଯାଏ । ଲାକ୍ ପରିପାଦା କିମ୍ବା । କ୍ଷିତିଜ
ଲାଗୁ ଆଖିବାର ଏବଂ କବିତାର କିମ୍ବା ଏବଂ ଆଖିବାର କିମ୍ବା
କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ
କାହିଁ । ଆଖି କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ । ଏହିକିମ୍ବା
କାଳ ଯାଏ କି କିମ୍ବା କିମ୍ବା କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ
କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ । ଏହିକିମ୍ବା
କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ ।

କାହିଁ
କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ
କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ ।

ଲକ୍ଷ୍ମୀପୁସ୍ତକାରୀପିତ୍ତମାଳା, ପ୍ରକାଶପ୍ରଦାନ

ଆମୋଚନ ଚକ୍ର

ଶବ୍ଦ : - ମିଳିକମ - ୨୯୧୦

ଶୋଳ ନଂ : - UA-211-101-0095

ଅଧୀକ୍ଷୀ : - କତୁର୍ମ ପାତ୍ରମିଶ୍ର

ବିଷୟ : - ବୈଷଣିକ ଜ୍ଞାନ (ଛାତ୍ର)

ଅଙ୍କୃତିକରଣ ନଂ - ୨୧୦୧୩୨୨୭

କାର୍ତ୍ତକ : - ଅଞ୍ଜନୀପୁସ୍ତକ - ନାଇତ୍ରେ (ASIM-SE-
4014)

୨୫/୦୫/୨୩

ଛାତ୍ର

" ଏବନ୍ଦେ ଶ୍ରୀକିମ୍ବ, ଜୋଖିନ୍ଦ୍ର-ମୁଖ୍ୟ-ଅଧ୍ୟେତ୍ରିକ୍ସ-
ଦେଇ ? ଲୋହ- ମୋଣିନ୍ ପ୍ରିଣ୍ଟିଂ୍ସ । କିମ୍ବ ବନ୍ଦିଷ୍ଠ-
ବୋଲ୍ଦିମାଳ - ଲୋହ ଆମାନିଙ୍କ ଲୋହିବ୍ୟାପ " । ଆତ୍ମ-
ଜୀବ - ପୃଷ୍ଠାମ୍ବି ପ୍ରକାଶ - ଶ୍ରୀକିମ୍ବକି ଫୋନ୍ଡେଶ୍ଵର
କାର୍ଯ୍ୟ । ଏକାଶବଳ - କମ୍ କୁରି ପ୍ରକାଶ - ଶ୍ରୀକିମ୍ବିକ୍-
କାର୍ଯ୍ୟ - " କିମ୍ବ - ଲୋହ କ୍ଷମ, ବେଳମ୍ବ - ବୋଲ୍ଦିମାଳିଙ୍କୁ
କ୍ଷମ କିମ୍ବ ପିଲାପ, ପିଲାପ - କିମ୍ବିଙ୍କ " ।
କିମ୍ବ - ମୋଣିନ୍ - ମୋଣିନ୍ - କିମ୍ବିଙ୍କ କିମ୍ବିଙ୍କ
ପ୍ରକାଶ - କିମ୍ବିଙ୍କ - କିମ୍ବିଙ୍କ 2 - କିମ୍ବି-
.କିମ୍ବିଙ୍କ - କିମ୍ବିଙ୍କ 2 - କିମ୍ବିଙ୍କ - କିମ୍ବିଙ୍କ
କାର୍ଯ୍ୟ - କିମ୍ବିଙ୍କ 2 - କିମ୍ବିଙ୍କ - କିମ୍ବିଙ୍କ -
କିମ୍ବିଙ୍କ - କିମ୍ବିଙ୍କ - କିମ୍ବିଙ୍କ ? କିମ୍ବିଙ୍କ -
କିମ୍ବିଙ୍କ 2 କିମ୍ବିଙ୍କ 1 "

(1)

ପୁଲ - ଚିତ୍ରମେ ଲୋକ - ଯୀବ - ଚନ୍ଦ୍ରମେ - ଶ୍ରୀକିଂକା -
ପୁଜ୍ରାତି - କାଳେ, "ଫାଟ - ମୀହିବ - ଲୋକ - ।
ଲୋକଙ୍କ ବିଜ୍ଞାନ - କର୍ମତ୍ତେ + ମେଘ - ରମେ - ସମ -
ଚିତ୍ରମେ - ଯୀବିଦ୍ରୁ । - କୋଣି, ଉତ୍ସୁକିବ୍ରତୀ, ଅଗ୍ନିନୀ
ପାନ୍ଧୀର ଲୋକଙ୍କତେ - କ୍ଷମାଲୀ - ଲାକ୍ଷ୍ମୀନୀରୁ
ଶିଥରେଇ ଯାଏନ୍ତି । କ୍ଷମାଲୀ ବ୍ୟାକ୍ରମ କିମ୍ବାକୁ
ଦେଖ - କ୍ଷମାଲୀର - କ୍ଷମାତ କୁମାର - ଶୋଭିନ୍ ଯୋଗିନୀ -
କୁମାର କ୍ଷମାତ କୁମାର - ଶୋଭିନ୍ - ଯୋଗିନୀ ।

ନଡ଼ି - ପୁଜ୍ରାତି ଉତ୍ସୁକିବ୍ରତୀ କୁମାର କ୍ଷମାତ
ଶିଥରେଇ ଯାଏନ୍ତି, "ଏ'ବୀ, ଦୁଇ କର୍ମକାରୀଙ୍କ
ନାମରେ । ଶୋଭିନ୍ ଲୋକ ଯାଏ । କିମ୍ବାକୁ
ଦେଖ - କ୍ଷମାତ - କ୍ଷମାତି - ଗାତ୍ର, ପାନ୍ଧୀର - ଯୋଗିନୀ
ଶୋଭିନ୍ - ବସ୍ତୁ - କୁମାର - କ୍ଷମାତି -
କ୍ଷମାଲୀ - କ୍ଷମାତି - କୁମାର କ୍ଷମାତି -
କ୍ଷମାତି - କୁମାର - କ୍ଷମାତି, କୁମାର କୁମାର
କ୍ଷମାତି - କୁମାର ? "

କୁଳାଳ ମିଶନ୍ ପରିଷଦ, ଭୋଗବତ, ଓଡ଼ିଶା.

ପ୍ରକଟ ଚାର ହେଲୁଥିବା ଯାଇଲୁ । ୧୯୫୮
ପ୍ରଦୀପ ମାତ୍ର - ଶବ୍ଦାଳ୍ପିନୀ ଶବ୍ଦାଳ୍ପିନୀ ଶବ୍ଦାଳ୍ପିନୀ
ଅନ୍ଧମାତ୍ର - କୁଳି - କାରୀଶ୍ଵର ଲୋଡ଼ । ଆମୀଲେ ଆମୀଲେ
ଅନ୍ଧମାତ୍ର - ଲୋଡ଼, କିଂକର - ପ୍ରଦୀପ ପ୍ରଦୀପ ପ୍ରଦୀପ -
ଦେଖାଇଲେ - ପୁରୀ - କଣ୍ଠର - ବିଜୀବିନୀ ମୁଣ୍ଡ ଅବଳି -
ଲୋଡ଼ । ଅକଳି - ନିଜର - ଲୁକ୍ଷିତ - ମନ୍ଦିର -
କୋଣଟିକ - ୨୦୭ ଟିକ୍ - ଟାଙ୍କ ଦେଖି ଦେଖି -
୮ ବାଜିଲେ - ଲେନ୍ଟ ହେଲେ ହେଲେ - ଲେନ୍ଟ ହେଲେ -
କିମ୍ବାରିଲେ - "ଦେଖ .. ଦେଖିଛିବେ - କାହିଁଲେ -
ଶବ୍ଦାଳ୍ପିନୀ ଶବ୍ଦାଳ୍ପିନୀ - ଆମାଶୀଳ -
ଶବ୍ଦାଳ୍ପିନୀ - କାହିଁଲେ - ଶବ୍ଦାଳ୍ପିନୀ - ଶବ୍ଦାଳ୍ପିନୀ -
ଦେଖିଲେ - "କିମ୍ବାରିଲେ - କିମ୍ବାରିଲେ - ଦେଖିଲେ -
ଶବ୍ଦାଳ୍ପିନୀ - କାହିଁଲେ - ଶବ୍ଦାଳ୍ପିନୀ - କାହିଁଲେ -
ଶବ୍ଦାଳ୍ପିନୀ - କାହିଁଲେ - ଶବ୍ଦାଳ୍ପିନୀ - କାହିଁଲେ -

ଚାର କାଳୀ ହିନ୍ଦୁ — ଜୋଡ଼ି — ଲାଗି — ଆନିବିଲେ —
ଧାର — ଲ୍ୟାମେ — ଏହି, କି ଖୋଲୁ — କାହିଁତେ ଆବଶ୍ୟକ —
କୁଣ୍ଡଳେ — ଜୋଡ଼ି — ~~କାହିଁତେ~~ । କିନ୍ତୁ କାଳ ପିଲାର —
ପ୍ରଜୀବ ଅଭିଭୂତ ପାଦ କାଳ — କିନ୍ତୁ ଯେଉଁ ଏହିବେ —
କାଳ ଖୋଲୁ — ବ୍ୟାକ୍ଷଳେ — କୁଣ୍ଡଳକାଳ — ସବେଳ କାହିଁତେ —
ପାଦକାହିଁତେ ଖୋଲେ — ପାଦକାଳ ଏହି । କୁଣ୍ଡଳକାଳ —
କୋଣକାଳ — କାଳ ଅନ୍ତରୀକ୍ଷ ଲାଗାନ୍ତାଳ — ଏହି ବାବେଲେ —
କି ଖେଲ । ଫିଲେଟେ କିନ୍ତୁକାଳର — କାହିଁତେ ଖୋଲୁ —
ସବେ — କୀର୍ତ୍ତନ ଅଭିଭୂତ — କାଳରେ — କାଳରେ —
ଗାନ୍ଧିବ — କାଳରେ — କାଳ ଅକାଶ — କାଳରେ —
କାଳରେ — କୁଣ୍ଡଳ ଖୋଲୁ — କାଳରେ — କାଳରେ —
କାଳରେ । ସବେଳ — କାଳ — କାଳରେ — କାଳରେ —
କାଳରେ — କାଳ — ଏହି ଏହିଜୀବ । କାଳରେ —
କାଳରେ — କୋଣର କୁଣ୍ଡଳ — କୁଣ୍ଡଳ — କାଳରେ —
କୁଣ୍ଡଳ ଖୋଲୁ — କାଳ ଲାଗାନ୍ତାଳ — କାଳରେ । କାଳରେ —
କାଳରେ — ଏହିକାଳର ସବେ — କୋଣର କାଳରେ

ଆଜାଲିବ୍ରଦ୍ଧି - କାନ୍ତି - ପରମ - ଶିଖିତ୍ୟେ । ଫି -
ଶିଖିତ୍ୟେ - ପାତା - । ଫିରିଦିଲ - ପରମ - ଶିଖିତ୍ୟେ -
ପରମ - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା -
ଫିରିଦିଲ - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା -
ଫିରିଦିଲ - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା -
ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା -
ଫିରିଦିଲ - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା -
ଫିରିଦିଲ - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା -
ଫିରିଦିଲ - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା -
ଫିରିଦିଲ - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା -
ଫିରିଦିଲ - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା -
ଫିରିଦିଲ - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା -
ଫିରିଦିଲ - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା -
ଫିରିଦିଲ - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା -
ଫିରିଦିଲ - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା -
ଫିରିଦିଲ - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା -
ଫିରିଦିଲ - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା - ପାତା -

ଛୁଟ ଖେଳନ୍ତି ହେଲା — କିମ୍ବା — ଶୁଦ୍ଧପରୀକ୍ଷା । ସତ୍ୟନବ —
ଆହୁ — କାହୁ — ବାବା କିମ୍ବାକେନ — ବେଳେ କୋଳେ —
ଶବ୍ଦ ଲାଗିଥା — ବିଜ୍ଞାପିତା — କଷ୍ଟକର୍ତ୍ତା କାହୁକୁ କିମ୍ବାଲ
କିମ୍ବାଲ — ଶବ୍ଦ — ଏ ଆହୁ ? ଏବେ କିମ୍ବାଲ କିମ୍ବାଲ
ଅଛି । କାହୁ କିମ୍ବାଲ — ଶୁଦ୍ଧ କିମ୍ବାଲ । ଅବିନିଷ୍ଠା
ବୋଲିଲା — ଲଗତ କିମ୍ବାଲ — ଶୁଦ୍ଧିଲ, ଅବ ଆବଦ —
କିମ୍ବାଲ — କାହୁକୁହୁବି — ଶୁଦ୍ଧିଲ — କେତେ — କଣ୍ଠ କାହିଁ—
କିମ୍ବାଲ — କିମ୍ବାଲ — କେତେ — କଣ୍ଠ କାହିଁ, କେତେ କାହିଁ—
କିମ୍ବାଲ — କାହିଁ — କେତେ — କାହିଁ କାହିଁ — କାହିଁ କାହିଁ —
କାହିଁ — କାହିଁ — କାହିଁ — କାହିଁ । କିମ୍ବାଲ କିମ୍ବାଲ
ବୋଲିଲା କେତେ କାହିଁ — କାହିଁଲା — କାହିଁଲା କିମ୍ବାଲ —
କାହିଁଲା କିମ୍ବାଲ — କାହିଁଲା — କାହିଁଲା — କାହିଁଲା —
କାହିଁଲା — କାହିଁଲା — କାହିଁଲା — କାହିଁଲା — କାହିଁଲା —
କାହିଁଲା — କାହିଁଲା — କାହିଁଲା — କାହିଁଲା — କାହିଁଲା —
କାହିଁଲା — କାହିଁଲା — କାହିଁଲା — କାହିଁଲା — କାହିଁଲା —
କାହିଁଲା — କାହିଁଲା — କାହିଁଲା — କାହିଁଲା — କାହିଁଲା —

(2)

ଲକ୍ଷ୍ମୀପୁର ଜ୍ଞାନବିହୀନାଳ୍ଯୁ, ଲକ୍ଷ୍ମୀପୁର

ଆଶାକ୍ଷାଣ ମିଳାଗ

୨୦୧୯୦୩ ମୁଖ୍ୟମିତ୍ର ଆରିଟ୍ଜ (ASM-SF - ୫୦୧୫)

ପୋଲେଟା ପତ୍ର ମିଶ୍ରଙ୍କ ପ୍ରେରିତ ଚାଲୁ ।

କ୍ଷେତ୍ରିକ : - କୋରାକିପ ଅଳ୍ପ ।

ଅପ୍ରତକଟ୍ଟ

ନାମ : ଲିଲିପଦା ପର୍ବତ

ଅଗିନ୍ତି : ଚତୁର୍ଥ ଜାତ୍ୟାଧିକ

ଅଗିନ୍ତି ମୋଲନ୍ଡ : ୧୫

ପାଞ୍ଜିଯିଙ୍ଗନ୍ଦ : ୨୦୧୩୨୧୬

ଓ. ପି. ଏଲନ୍ଦ : UA-211-

୧୦୧ - ୦୦୮୨

ବୋଲାଯାର ଆଜ୍ୟା

ନିମିଷକଣ ସଂଗ୍ରହ

ଶୁଦ୍ଧଲ୍ପୁର ନାମର ଗାଁଓ ଖେଳତ (ଗୋପୀ ନାମ)

ମାନୁଷ ଜନ କାମ କରିଛିଲ | ଗାଁଓର ବମ୍ବୁନିଯା
 ଆହିଲ | ଗାଁଥ ଜୀବିଲେ ମାନୁଷ କୁମ୍ଭ-ଶାନ୍ତିରେ
 ବାଯ କରିଛିଲ | ଗୋପୀଙ୍କ କାଳୀ ଧ୍ୱନିଲି ଆହିଲ
 (ଧ୍ୱନିଲି) ଅନ୍ତିମ ନାମ ଆହିଲ କରିବା | କାହିଏ କରିବା
 ଆବଶ୍ୟକ କାହିଁ ହୁଅଇଲି | କାଳ ହୁଏବା ହେବାଲି
 ଆହିଲ | କାହିଏ ହେବା ଗୋପୀ ବମ୍ବୁନିଯା ହେବାଇଲି
 ଆହିଲା | ଗୋପୀ ଆତିଥିଲ ଆହି ପୁରୁଷ ଆହିଲାକିମି
 ଗାହିଲି | ଆଖ କେହି ହାତି ଲୋଇ | ଆଖ କେହି ପଟ୍ଟଚାରେ
 ଚାଲି, ହୃଦଳ, କାଳ, କର୍ମକି କହି ଆହିଲାକିମି
 ଏବେଳାଦିନ କାହାଇଲି | ଗୋପୀ ଦିନ ହାଜିଲା ଓ

काचित्ति। यस दुर्ब कृष्ण श्रेष्ठी आणि डॉ
श्रेष्ठी आंशि द्वारा काढिले।

आंशि देखाउ वस झुँगुविधा, नामस लगा
श्रेष्ठी आहिले। आंशि देखले घरमध्ये आगले
दूर्ब कृष्ण श्रेष्ठी काचित्ति। वहु अंशि जाविट्टि
पास वाचिकै आंशि चक्रवाही उक्तुले आग ओन
काचित्ति आणि यांचा उनात तेंवढत जान आहिले।

प्रीति अन अर्जुन वाङ्मा नवा शुद्धुल झुँ
गांडावत झुविवील आहिट्टि। अर्जुन गांडावत
आंशिको निधिवील आहिट्टि। अर्जुन आंशिको गवड
पाहले काचित्ति। अर्जुन आंशिक विजय अवाळा
गोवा बांडीचे वानुवट लगत आहिले झुविट्टि तु

आंशि वात जान श्रेष्ठी।

अर्जुन दाखत डेडति तांडि गांडकर वांडीक
विजय अवाळा दूर्ब होट्टि। अर्जुनास शांकर
वाच आहिले आलिवी। अर्जुन आंशिक

विद्या कहां से आयी नहीं जानता है। लिखु जो
 जाया उल्लेख आवश्यक नहीं है तो आप अर्जुन
 लिखिए हम आपकी जानकारी आपके लिए
 बहुत ज़्यादा आवश्यक नहीं। उचित चलाकी कराए
 औलिचक द्वारा विद्या लाभित हुआ दर्शक
 द्वारा लिखी जाए अर्जुन आकर्षण रखने का तुम्हारा
 विद्या। कौन यह जान सकता है? विद्या
 लाभित। अर्जुन जो आवश्यक नहीं है वह
 द्वारा दर्शक द्वारा लिखित होता है। तो विद्या
 विद्या लाभित होता है। अब विद्या लाभित
 आज तक - यिर्ता है।

उसका अर्जुन लाभित लगता है।
 लाभित अर्जुन आवश्यक दर्शक लिखता है। लिखता है।
 लिखता है। लिखता है। लिखता है।

ଅନ୍ତିମ ଆଲିଙ୍କି ଉପରେ ଆଶୀର୍ବାଦ ଲଗାଏ ଅନ୍ତିମ
 ହେ ଆଏ । ଶୀଘ୍ର କଥା ଅଟେଇ କାହା ଦୋଷରେ
 ଶୀଘ୍ର ମଧ୍ୟ ଆଲିଙ୍କି ହୁଏ ଯଦି ୨୦୮୦ ଆଖିରେ ଆଲିଙ୍କି
 ଯଦି କର୍ମକାଳୀମେ ଅଟେ ଯଦି ୨୦୮୦ ଆଖିରେ ଆଲିଙ୍କି
 ହେ ଆଏ । ବ୍ୟାପକ ଦୋଷ ଫିର କଥା ନେଇ ।
 ନେଇ ହୋ ଦୋଷକାଳୀମେ ଫିର କଥା ନେଇ ।
 ଏବେଳେ ଆଲିଙ୍କି ଅନ୍ତିମ ଆଲି-ଶାକାଜ ଯାଇ ୨୦୮୦
 କିମ୍ବା ଶୀଘ୍ର ୨୦୮୧ିଥିରେ ଶୀଘ୍ର ଆଲିଙ୍କିରେ
 ନିଜର ମଧ୍ୟ ଦୂରିଲାଗୁ । ଆଶୀ ଆଲିଙ୍କିର କାହାରେ
 ଅଥାବା ହୁଏ ଆଲିଙ୍କି କାହାରେ । କିମ୍ବା ଆଲିଙ୍କି ଅଥାବା
 ଶାକାଜ ଦୂରି କାହାରେ ।
 ଆଲିଙ୍କିର କାହାରେ ଆଶୀ କିମ୍ବା ନିଜର ଦୂରିରେ କିମ୍ବା
 ଏବେଳେ କାହା ଆଲିଙ୍କି ଦୂରି କାହାରେ ।
 ଏବେଳେ କିମ୍ବା ଅନ୍ତିମ ଦୂରି କାଲିଗୁଣ ଗଲି ।
 ଅନ୍ତିମ ଦୂରି କରାଏତ ଆଲିଙ୍କି ଶାକାଜ ଉପରି
 ଅନ୍ତିମ ଦୂରି କରାଏ କାହିଁ ୨୦୮୦ ।

ଏମିଳୋଇଲ କ୍ଷାତ୍ର ମେଳିନି ପାଞ୍ଚ ଦ୍ୟାନାମ୍ଭି ଶବ୍ଦିଆ
 ଲାଗିଲେ ମଧ୍ୟାତ ହୋଇଥିଲ ଆଖି ପ୍ରେମିତିତିଲ । ତାଙ୍କ
 କିନ୍ତୁ ଶବ୍ଦିଆ ପାଆ ଏମିତିନ ବାତି ଦାଳାଳେ
 କରାଯାଏ ପ୍ରାଚୀନମାତ୍ର ହେଉଥାଏ । ଶବ୍ଦିଆ ଅଛା
 ଯେବେବେତ ବନ୍ଦ କାହିଁ ରାତି ରାତି । କାହାରେ ପ୍ରେମିତିଲ
 ଆଖ କିନ୍ତୁ ଏମିତିକୁ ଶାଲିନୀ ପ୍ରେମିତିଲ ପାରେ ପ୍ରେମିତିଲ
 ଡାଳାଳେ ବନ୍ଦ କିନ୍ତୁ ରାତି ରାତି ପାରେ ଶାଲିନୀର ପରାମର୍ଶ
 ସମ୍ମାନ କାହିଁ ଆଖ ଏମିତିଲ ପାରେ ରାତି ରାତି
 ଶାଲିନୀ ପାରେ ଏମିତିଲ ବାରି ପାରେ ନିଜର ଜାଗର ନିର୍ମିଳ
 ମଧ୍ୟ କାହିଡ଼ିଲ । ଆଖ କିନ୍ତୁ ନିଜର ହୃଦୟରେ ନିର୍ମିଳ
 ପିହାରିଲା ନିଜ କାହିଁ ହୃଦୟରେ ପାରି ପ୍ରେମାଳେ ।
 ଏମିତିଲ ଏକ ହି - ହି - ଏମିତିଲ ଆଖ ଅର୍ଜୁନକ ହୋଇଲେ
 ରାତି ଏକ ପ୍ରମାଣିତ ରାତି ।

ଅର୍ଜୁନ... ଦୁଇ ଲୈ ଦୟତ ଆଖି କାଳେ ଆ
 ଶବ୍ଦ କାମ କରି ଏମିତିକୁ ଶାଲିନୀ ନିଜର ରାତି ରାତି
 ପ୍ରେମାଳି । ତାଙ୍କ ଦୟତ କାହିଁ ।

अर्जुन साहित्य दण्डका संस्कृत ग्रन्थ उपनिषद् वा साहित्य
 दण्डका काल एवं विद्या (प्राचीन विद्युत् साहित्य दण्ड
 ०१२८ श्लोक) । साहित्य-दण्डका अर्जुनवाम उपनिषद् ग्रन्थ
 है इसके लिए उपनिषद् अर्जुन काल वा प्राचीन (प्राचीन
 नाम) । एसोका रूप साहित्य दण्ड विद्या उपनिषद् वा
 अर्जुन उपनिषद् (एवं अग्रसंविधान (प्राचीन) विद्या
 मा शब्दि लेखा जाहे राज्यकालानुसारी द्रुति ।
 उपनिषद् ग्रन्थ उपनिषद् उपनिषद् विद्या उपनिषद् विद्या
 अर्जुन शब्द भवते राज्यकाल विद्याविद्या उपनिषद् विद्या
 द्वितीय अवधि वा अर्जुन अर्जुन उपनिषद् विद्या
 अर्जुन उपनिषद् विद्या उपनिषद् विद्या उपनिषद् विद्या

आँख दूरहा होता | तेजियाँ गाल काले गोल कुड़ा
 आसि फिराह मुक्के बोट सीधा बालि लोलोट्टा लाली
 गढ़ तोल होइनी अद्वित अतिया दुखि लाइता |
 अज्ञान और प्रेत विमुक्त करा दोइ . तेजिया साथा
 आखोइ तारि दूले एवं दूरहा आँख अखुन
 शेर आम दोइ . आम एवं चालड़ बालग डेढ़ दृश्यो
 गोलास गाले वारे दुखि लाल एवं विजय धाराली
 विचिनारोइ . उसक लविलोइ . आम एवं लोटोइ करा
 दुखि लाइता | तेजियाँ अर्जुन बालग दूलि दूल
 दूल . दिः ये तुमि ईमाव देखा दाम दरिया एवं
 अभाव . दूलियाँ उम्मी बालग दूल | बाल दूल
 दूलाली दुखि . बाल आसि फिरा बाल अतियाँ अ
 लिया . बाल आसि लोलोवा उचि | लाल दूल एवं
 अभाव आसि दुखलोले अर्जुन करि एवं एवं अभाव
 दूल . एवं आखा दूल अतिया | ये दूली ,

ଶ୍ରୀମତୀ - କାଳିନେ ଶ୍ରୀମତୀ ପ୍ରକଳ୍ପିତ ଉଦ୍‌ଦେଶ୍ୟରେ ଉପରାକ୍ଷମ

ଏହାକୁ କାମ କରିବି ନାହା ।

ଶ୍ରୀମତୀ କାଲି ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକ ପ୍ରକଳ୍ପିତ ପ୍ରକଳ୍ପିତ କାମ କରିବିଲୁଗା ।

ଏହାକୁ କରିବାକାମ କୁଣ୍ଡଳ ଭୂଲାପୁରୀ କରି କରିବାକାମ ।

କାଥି ଅର୍ଦ୍ଧବିହାର କାଲି କୁଣ୍ଡଳ ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକ କାମ କରିବାକାମ ।

କୁଣ୍ଡଳ ଏହାକୁ କାମ କରିବାକାମ । ଆଖି ଶାଶ୍ଵତ-ଅର୍ଦ୍ଧବିହାର କାଲି

କୁଣ୍ଡଳ ଏହାକୁ କାମ କରିବାକାମ । ଆଖି କାଲି କାମ କରିବାକାମ ।

କାଲିରେ ।

ଆଜିର କାମ କରିବାକାମ କୁଣ୍ଡଳ କାଲି କାମ କରିବାକାମ ।

କାଲିରେ କାମ କରିବାକାମ ।

ଶ୍ରୀମତୀ କାଲି କାମ କରିବାକାମ ।

କାଲିରେ କାମ କରିବାକାମ ।

~~~~~

\* আধুনিক কবিতার চলিষ্ট লিখ্য নেই বলিষ্ট সমূহ মুঠ  
উচ্চীক স্বাটি স্বীচিৎ করিতা লিখা ।

Ans:— আধুনিক কবিতা মূলতঃ পাঞ্জাখ সাহিত্যের ফল। আধুনিক  
কবিতার প্রথম মুক্তি সময়ের পৰা আধুনিক কবি অন্ধক্ষয়ৰ  
ইতিহাস কড়িয়াই আনিছে আৰু বেশীটিক মুৰক একাশবীজ  
কৰি দৈ বাঞ্ছণ্যক আদৰণি জনাইছে। চেষ্টা সময় ইতো  
পৰিষ্কাৰ জিনি মিথুন সাহসেৰে বাহন হৃল্যবৰ্বিক সুচনায়ে  
প্ৰহণ কৰিব পাৰিব রাখিবে 'আধুনিক' আৰু এই হৃল্যবৰ্বিক  
মি কবিতাত সুপৃষ্ঠাতোৱে অৱশ্য পাইছে, মিয়েই আধুনিক  
'আধুনিক কবিতা।'

— আধুনিক কবিতা বিভিন্ন বিভিন্ন পৰিপূৰ্ণ। কুকি  
অভিলোক পৰিষ্কাৰি— আৰু সামাজিক আৰু মানবিক পৰিষ্কাৰ  
আধুনিক কৰিসকলক অৱশ্য জীবন আৰু জগতক কেন্দ্ৰ কৰি  
বাহন কৈপলাকি, বাহন ব্যান-ব্ৰেণা— আৰু বাহন চিতা ধাৰাৰ  
জন্ম দিয়ন। এই বাহন ব্যান-ব্ৰেণাৰ কৈ কলাগচ্ছ বাধ্যক  
অৱশ্য, আধুনিক কবিতাৰ কিছুমান সুবীজা বিভিন্ন আছে।  
এই বিভিন্ন ব্যাবস্থাৰ অপ প্ৰথমেই মুঠ —

★ জ্ঞান

গল্ল★

বিষয় :

পোরা  
চূড়ান্তের

জ্ঞান

নাম : মীরসুমা রহমান  
ঠায় : ৬৪৭ , ফো : ০১০৭

Bio- Data

Name :- Moriom Begum

College :- Lakhipur College

Sub :- Assamese (Skill Enhancement course)

Paper :- ASM-SE-4014

Semester :- B.A. 4th Semester

Roll :- 313

Roll NO GU :- UA-211-101-0107

Session :- 2023 Eng

## ପ୍ରେରଣା ଟ୍ରୋଲେକାର ଗେଡ଼ିଙ୍

ଚନ୍ଦ୍ର ମହାତମ ପାତ୍ର- ପ୍ରକାଶ ଚାନ୍ଦ ସହି-

କିଞ୍ଚିତକଥା କରାବ ପିଛଟି transfer କାଳ  
ପ୍ରେରଣାର ଏହା ଆଖିତ କାହାଠ । କିନ୍ତୁ  
କାହାଠ ଆଜି କୀଳ କାହାଲେ କିମ୍ବା ପାଇଁ ।  
ତେଣୁଠି- ପ୍ରେରଣାର request କାହାଲେ ୫୩୦-  
ଲାଗନ୍ତ ଯାବ କାଲି । କିନ୍ତୁ ପ୍ରେରଣା ପାଇଁ-  
କାଟ- ଯାଇବ କାହା କୋଣେ କିମ୍ବା କାହାଠ । କାହାଠ  
କାହାଠ କାହାଲେ କାହା ପ୍ରେରଣାର ଲାବାରୀ  
କାହାଠ କାହାଲେ କାହା କାହାଲେ କାହାଠ-  
ଯାଇଁ, ୫୩୦- ପ୍ରେରଣାର- କାହାଠ- କାହାଠ, ୫୩୦-  
କାହାଠ- ଯାବ । ଶେଷଟ- କାହାଲେ ପ୍ରେରଣାର  
କାହାଠ କାହା କାହାଲେ କାହାଠ- କାହାଠ-  
କାହାଠ । କେବଳ କାହାଠ ତେଣୁ- ବାବୁ କାହାଠ,  
ଯାତ୍ର କାହାଲେ- transfer କି କୋଣେ । ୫୩୦-  
ଲାଗନ୍ତ- ମେହାରୁର କାଠ- କାଠ- କାହାଠ, ୫୩୦  
ପ୍ରେରଣାରକୁ କୈ କାହାର କାହାଠ ।

କିଞ୍ଚିତ କିମ୍ବା ୫୩୦ ଟ୍ରୋଲୋକା କୁହାନ ଯାଇଁ

P. T. O.

ନେପାଲ କାଠିଲେ । ଚେତ୍ରମେଳକ ଦୁଇଶବ୍ଦ କ୍ଷେତ୍ରି-  
କାଳ ଶୁଭିରାଜରୁ-ହାଲେ ଏଥାର ଏକଟି-ପ୍ରତିକ  
ବ୍ୟବସାୟ କାଠିଲେ । ନିର୍ମାଣ ଏଥାର building ଓ  
ଅଧିକଟି ଚେତ୍ର ସମ୍ମଗ୍ନ ନିର୍ମାଣ କାଠିଲେ । ଚେତ୍ରମେଳକରୁଙ୍ଗା  
କୋଟି ଦିନ୍ଦ୍ରିୟ ଏ-ମାର୍କେଟ ଶୁଭିଲେ ଏକଟି ଏଥାର  
building ଓ ହରାଟେ ବ୍ୟବସାୟକାରୀ କ୍ଷେତ୍ର  
କାଠିଲେ । କାଠିଲ ସମ୍ମଗ୍ନ କ୍ଷେତ୍ର ଅନ୍ତର୍ଭାବ । ଚେତ୍ର  
ଲୋକଙ୍କ- ପାଇଁ କାଥା- ସତର ଚାଲି ସମ୍ମ  
ଅନ୍ତର୍ଭାବ । ବୋଲିଟ କାହିଁ ଏକଟି ଏଥାର  
building ଓ କିମ୍ବା । ଇମ୍ବା- ଏଥାର building  
ଏଥାର building ଓ କାହିଁ- ଏଥାର building  
building ନାହିଁ । ଏହି କାଠିଲ ଇମ୍ବାର ନିର୍ମାଣ  
କାଠିଲେ କାଠିଲେ । କାଠିଲ- building  
ଅନ୍ତର୍ଭାବ ଦିନ୍ଦ୍ରିୟ ଶୁଭିଲେ, ଚେତ୍ରମେଳକ ନିର୍ମାଣ  
ଏଥାର ବରଚାରୁ building ଯାର ଶୁଭିଲେ-  
କ୍ଷେତ୍ର- କାଠିଲେ । କାଠିଲ ଏଥାର ଶୁଭିଲ-

ଶ୍ରୀମତୀ କାଳେ ଦୈତ୍ୟ ପାଲିଙ୍ଗ ପରିଷଦ୍ ରୀତି  
ରୀତି ନିଜର ପରିଷଦ୍ ପାଲିଙ୍ଗ ବର୍ଷ  
କାହିନ କୌଣସି ଦୈତ୍ୟ- ପରିଷଦ୍ ।

ବାଣିଜ- ହେବରାତ- ନିଜର ପରିଷଦ୍ ରୀତି,  
ନିଜର ବହାରେ କାହିଁ ଦୈତ୍ୟ ପାଲ ପରିଷଦ୍  
କୁଣ୍ଡଳ ରାଜ୍ । ଏହା ଅନ୍ଧାର ପରିଷଦ୍ ରୀତି  
କୁଣ୍ଡଳ- କାଳେ ପାଲ । ନାନ୍ଦି ପରିଷଦ୍-  
ପାଲ- କାଳେ ପାଲ- କାଳେ ପରିଷଦ୍- ପାଲ,  
ନିଜର କୋଟି ବଳାକ୍ଷ- ନିଜର କାଳେ ପରିଷଦ୍  
କାଳେ ପରିଷଦ୍- କାଳେ ସେଲକାନିଟ- ୦୯୯୩୪୮  
କାଳେ- କୁଣ୍ଡଳ ବର୍ଷ । ପରିଷଦ୍ ପରିଷଦ୍  
କୁଣ୍ଡଳ- ୦୧୨୧- କାଳେ- କାଳେ ୧୫୨୨୦- ୦୯୮୦୪  
building କାଳେ କାଳେ- କାଳେ- କାଳେ କାଳେ  
କାଳେ କାଳେ ।

ଶ୍ରୀମତୀ କାଳେ ପରିଷଦ୍- ପାଲ, କାଳେ  
କାଳେ ୧୨ ମୋର building ୦୧୫୦୦୬-  
କାଳେ । କାଳେ- ୩୬୫୫ ୬୫ ୧୫୨୨୦୪ କାଳେ

P. T. O.

ଶୁଦ୍ଧ ମୋଟ ୩୦୦ ମିଲାର ଡିକ୍ଷାଳେ କାହିଁ-  
କୁଣ୍ଡଳ ପ୍ରାଚୀଯ ଏବଂ କାନ୍ତିକ ୨୦୧୦୮  
ମନ୍ଦିର ଏବଂ building ଏବଂ ମୋଟ ୨୫୨୦  
ମରା ଏହି , ଏହି ମନ୍ଦିର ଏଥାବିର୍ତ୍ତ ମୋଟ ୩୫୫  
କାହିଁ ଗୋଟିଏ ମୁଣ୍ଡ ସଠିଲ ଅନ୍ଧିତ-ଗୋଟିଏ  
ଏକାଟିଟି ମୁଣ୍ଡିଲ ପ୍ରେସ- ଘଟିଲ ।  
ମାତ୍ରା ମୋଟ ଆମ୍ବିଲେ କୁଣ୍ଡଳ କି ମୋଟ ୧  
ମାତ୍ରା କାହିଁ- ଏହି କାହିଁ- ମନ୍ଦିର-ଆମ୍ବିଲେ  
କୁଣ୍ଡଳ କାହିଁ ପାଇଁ କାହିଁ- ମନ୍ଦିର ଆମ୍ବିଲେ  
ଏ କାହିଁ- କୁଣ୍ଡଳ କି ଗୋଟିଏ ମୋଟ ୨୫୦  
ମନ୍ଦିର- ମାତ୍ରାମାତ୍ର କାହିଁ- କାହିଁ- ମାତ୍ରା  
କୁଣ୍ଡଳ , କୋଟି- ଏହି ମନ୍ଦିର- କୁଣ୍ଡଳ,  
ପିରମାତ୍ର ଏହି କାହିଁ ବେଳାମାତ୍ର- ଏହି ମୋଟ  
କାହିଁ- building ଏ କାହିଁ- କାହିଁ- କାହିଁ-  
କୁଣ୍ଡଳ- ଏ ଏହି- ମନ୍ଦିର- ଆମ୍ବିଲେ- କାହିଁ-  
କୁଣ୍ଡଳ- । କୋଟି କାହିଁ- ଏହି- କୁଣ୍ଡଳ-  
କୁଣ୍ଡଳ , କୋଟିକାହିଁ କିମ୍ବା କାହିଁ- କୁଣ୍ଡଳ

ଶ୍ରୀଚନ୍ଦ୍ର ପିଲ କଣ୍ଠ ମି- ୨୫୮- ୨୫୯୦-ମେଟ୍ରୋ  
ପାଇଲ୍ କୌଳ ୨୩୪ ହେଲ୍ ଲ୍ଲି- ବଲ୍ଲା ପାଇଲ୍  
ଟ୍ରେନ୍ ମାର୍ଗେ ଏଣ୍ ଲ୍ଲି- ଏଣ୍-୧୫୫୫୨  
ହଲ୍ ପାଇଲ୍- ଶ୍ରୀଚନ୍ଦ୍ର କଣ୍ଠ ମାର୍ଗେ-  
ଶ୍ରୀଚନ୍ଦ୍ର ପାଇଲ୍ ବେଳାରିତି- ୨୦୮ ପାଇଲ୍-building  
ପାଇଲ୍- ୨୩୨- ୨୪୮ । ପାଇଲ୍ ଡିଲ୍ ହଲ୍  
ପାଇଲ୍- ଶ୍ରୀଚନ୍ଦ୍ର ଲ୍ଲି- ୧୫୫୫୨ । ପାଇଲ୍-ଶ୍ରୀଚନ୍ଦ୍ର-  
ପାଇଲ୍-୧୫୫୨ ୨୫୮୨- ହେଲ୍ ଟ୍ରେନ୍- ପାଇଲ୍ ହେଲ୍  
ପାଇଲ୍- ପାଇଲ୍ ।

ହେଲ୍ ପାଇଲ୍ ହେଲ୍ ପାଇଲ୍-  
ପାଇଲ୍ ପାଇଲ୍ ପାଇଲ୍-ଶ୍ରୀଚନ୍ଦ୍ର- ପାଇଲ୍- ୨୩୨ କାନ୍ଦାଲୁଙ୍କ  
ପାଇଲ୍ ପାଇଲ୍ ପାଇଲ୍- ପାଇଲ୍ ପାଇଲ୍- ପାଇଲ୍-  
ପାଇଲ୍ ପାଇଲ୍ ପାଇଲ୍- ପାଇଲ୍- ପାଇଲ୍- ପାଇଲ୍-  
ପାଇଲ୍- ପାଇଲ୍- ପାଇଲ୍- ପାଇଲ୍- ୨୦୮୦-  
building ଓ- ୨୦୯୦- ପାଇଲ୍- । ଏହି ପାଇଲ୍-  
ପାଇଲ୍- ପାଇଲ୍- ପାଇଲ୍- ପାଇଲ୍- । ଏହି ପାଇଲ୍-  
ପାଇଲ୍- ପାଇଲ୍- ପାଇଲ୍- । ଏହି ପାଇଲ୍-  
ପାଇଲ୍- ପାଇଲ୍- ।

ବିଲେଖ-ମାଟି ଗୋଟିଏ । କେବଳ ଅଧିକ ହେଲାପାଇଁ  
ଦରମ ମାତ୍ର ବାରିକୁଳ ବେଳେ ଗୋଟିଏ  
building ଓ କବଳୀ । ଫେବୃଆରୀ ୨୨୦୮-  
ମାତ୍ର କୁଳିକୁ କେବେ କିମ୍ବା ବେଳେ କିମ୍ବା ।  
କିମ୍ବା-କିମ୍ବା ଶୁଣି ଚାଲେ, ଶୁଣି ଅଛି  
ଏବି-କିମ୍ବା କେବେ- କିମ୍ବା କିମ୍ବା ।  
ତୋଟ ମିନିଟ କାହିଁବାବା କାହିଁବା- ଅବିକୁ  
କେବେ କାହିଁ କେବେ ୩୬୦୦- କେବେ, କେବେ କେବେ  
୩୬୦୦, ଅଛି କେବେବାବା କିମ୍ବା ଆହି । କିମ୍ବା-  
କୁଳିକୁ କିମ୍ବା- କୁଳିକୁ କିମ୍ବା- କିମ୍ବା  
କୁଳିକୁ କିମ୍ବା- କିମ୍ବା, କିମ୍ବା-କିମ୍ବା  
କିମ୍ବା କିମ୍ବା କେବେ କିମ୍ବା କାହାରୀ- , କାହାରୀ  
କିମ୍ବା କିମ୍ବା କେବେ କିମ୍ବା- କିମ୍ବା । କୁଳିକୁ କିମ୍ବା-କିମ୍ବା  
କିମ୍ବା-କିମ୍ବା, କିମ୍ବା- କିମ୍ବା, କାହାରୀର କାହାରୀ-କାହାରୀ  
କାହାରୀ- କାହାରୀ । କିମ୍ବା- କିମ୍ବା କାହାରୀ-  
କାହାରୀ ଏବି- କିମ୍ବା- କାହାରୀ କାହାରୀ- କାହାରୀ-  
କାହାରୀ- କାହାରୀ- କାହାରୀ- କାହାରୀ- କାହାରୀ- କାହାରୀ-

ବେଳି ମେଟ୍ ଏତେ କାହିଁରୁ । ବେଳିଆ  
ଶ୍ଵାସିକା ଏବେ ଅମ୍ବୋ ପ୍ଲାନିଟ୍- ଫେଡ୍- ଏପ୍ଲି-  
ମେଟ୍- ଫେଲିନ୍- ଅମ୍ବୋ- ଫର୍ମ୍- ୩୨-  
୦୫, ଲୁହ ଲେହ ପେଣି ନିର୍ମାଣ- ୩୨-  
୦୫ । ବେଳିଆ ଶ୍ଵାସିକା କାଳେ ବେଳି ମେଟ୍  
ଏବେ ଏହି- , ଫେଡ୍- ମେଟ୍- ଫର୍ମ୍-ଏପ୍ଲି  
କାହିଁ ମେଟ୍ ।

ବେଳି- ଶ୍ଵାସିକା କାଳେ ଏହି- building  
କାଳେ କାଳେ ଏହି- ମେଟ୍ । ବେଳିଆ ଶ୍ଵାସିକା  
ଏବେ ଏହି building ମାତ୍ର ଏହାର ବୈଷଣି ଶ୍ଵାସି  
ମେଟ୍ । ଏହି- ଶୁକର୍ଯ୍ୟ- ମୋଡ- building-  
ମାତ୍ର ଏହାର କୋ ଏହି- ଶୁକର୍ଯ୍ୟ- ମୋଡ  
ମୋକଳେ ବେଳି ଏହି ମୋଡ କାହିଁରୁ- ,  
ବେଳିଆ- ଏହି ମୋଡ କାହିଁରୁ- ଶୁକର୍ଯ୍ୟ- ମୋଡ-  
କେବଳ ଏହି building ଏହାର ଏହି ଲାଗୁ-  
କାଳେ ବେଳି- building ମାତ୍ର ଏହାର , କେବଳ  
ଏହି ଏହି ମୋଡ କାହିଁରୁ- ୩୨- ମୋଡ ବେଳିଆ  
କେବଳ ଏହାର ଏହାର ଏହାର ଏହାର ଏହାର  
ଏହାର ଏହାର ଏହାର ଏହାର ,

End

ବେଳି- ଦେଖାଟ କଥା ହେଉ କାହିଁବା । ତେଣୁମା  
ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ ଏଟା ଅପ୍ରାଚ୍ୟନ୍ଦିତ- ଦେଖାଟ- ଏଠା  
ଦେଖାଟ କୋଟେ- ପେଟିବାଟ- ଲାଗିବା- ବିଜ୍ଞାନ- ୩୨-  
ହେବା, କୁଟେ ଯେବେ ପେଟିବାଟ ନିଷ୍ଠାନ୍ତା- ୩୨-  
ହେବା । ତେଣୁମା ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ କାଳେ ଦେଖାଟ ହେବା  
ହେବା ଏହି- , ଦେଖାଟ କେହିଟ କିମ୍ବାନ୍ତିରେ ଏହି-  
ହେବା ହେବା ।

ବେଳି- ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ କାଳେ ଏହି- building  
କିମ୍ବା କାମର ହୁଏ ହେବା । ତେଣୁମା ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ  
କାଳ ଏହି building ଯାଏ ଏହାର ବ୍ୟାପୀ ହୁଏବା  
ହେବା । ତେହି- ଶୁକରମ- ହେବା- building  
ଯାଏ ସାଧାରିତ ହେବା ହୁଏବା- ହୁଏବା- ହେବା  
ଦେଖାଟର ବ୍ୟାପା- ହୁଏବା ହୁଏବା କାମିଦିଲା ।  
ତେଣୁମା- ଏହି କାମ କାମ କାମ କାମ କାମ  
ତେଣୁମା ଏହି building କାମ- କାମ କାମ-  
ଦେଖାଟ ହେବା- building ଯାଏ ହୁଏବା- ହେବା । କାମ-  
ହୁଏବା ହୁଏବା ହୁଏବା ହୁଏବା । ତେଣୁମା  
ତେଣୁମା ଏହି କାମ କାମ କାମ କାମ  
କାମ କାମ କାମ କାମ କାମ ।

End

ଜୀବ୍ ମର୍ଦ୍ଦିଲ୍ୟ, ଜୀବ୍

ଆଲୋଚନା ଟଙ୍କ

ନାମ:- ମହିଳା ଶାହ

ଶୋଳ ନଂ:- UA-211-101-0084

ଟ୍ରେଣ୍ଟିଂ:- ଚତୁର୍ବ ସାମାଜିକ

ବିଷୟ:- ଟ୍ରେନିଂ ଗନ୍ଧ (ଟଙ୍କା ଶାହ ପଥଶା)

ପାଇଁଯନ ନଂ:- ୨୨୦୧୬୩୧୭

କାର୍ଡ ନଂ:- ମୁଖ୍ୟମୂଳକ ସାହିତ୍ୟ (ASM-SE-4014)

ଟୁମ୍ବ ରାତିବ - ପାଦିଳୀ -

ଶ୍ଵାସନବ - ଜାଗ୍ରତ୍ତ - ଧୀର୍ଜି - ଆହ୍ଲାଦି - ଶୁଣ୍ଡ - ଚକ୍ରବ -  
ଅର୍ଜୁନପୁରୁଷ - । ନିରବ - ଏଇଥାର - ଶାତିକାମନୀ - କୁଞ୍ଜା  
ରୂପ - ଦ୍ଵୀପ - ଆମେଖରୂପ - ନିରାପଦ - ଲାଜାଲି - ଛାବ  
ମନତ ନିରାପଦ - କାଳୀ - ଶୁଣ୍ଡବ - ଶ୍ରୀକରଣ । ଅର୍ଜୁନ ଶ୍ରୀମଦ  
ରାଧା - ଅର୍ଜୁନଙ୍କ - ଦ୍ଵୀପ - ଚକ୍ରବ - ଶବ୍ଦ - ବାନବ  
ଲାଜାଲିଖିତ - ବାନପ୍ରଶମନୀ - , ରମାତ୍ମା - କୁଞ୍ଜନିଶବ୍ଦଗାନ  
ଅର୍ଜୁନ - ନିରାପଦ - କାଳୀ - କୁଞ୍ଜନିଶବ୍ଦି - - ନିରାପଦ -  
ଶୁଣ୍ଡବ - ରାଜମହିଳା - ନିରାପଦ - ଶୁଣ୍ଡବ - ଲାଜାଲି - ବାନପ୍ରଶ  
ଅର୍ଜୁନପୁରୁଷ - ଚକ୍ରବନ୍ଦି - ।

ଚକ୍ରବନ୍ଦି - ଶାତିକାମନୀ - ନିରାପଦ - ଶାତିକାମନୀ -  
ଦ୍ଵୀପ - ଶାତିକାମନୀ - । ଏବରବ ଶାତାତ୍ମି - ଦ୍ଵୀପ - ଶାତିକାମନୀ  
ନିରାପଦ - ନିରାପଦ - ନିରାପଦ - ନିରାପଦ - ଚକ୍ରବନ୍ଦି -  
ଶାତିକାମନୀ - ନିରାପଦ - ଶାତିକାମନୀ - ନିରାପଦ - ଏବରବ -  
ଦ୍ଵୀପ - ଶାତିକାମନୀ - ନିରାପଦ - ଚକ୍ରବନ୍ଦି - ଅର୍ଜୁନ - - ଦ୍ଵୀପ -  
ଦ୍ଵୀପ - ଶାତିକାମନୀ - , କାଳୀ - ଅର୍ଜୁନ - ଶାତିକାମନୀ - ଏବରବ -  
ଅର୍ଜୁନପୁରୁଷ - ଶାତାତ୍ମି - ଶାତିକାମନୀ - ଏବରବ - ଶାତାତ୍ମି

କାହିଁ - ପଥା - ବିଜୁମେଲ୍ଲୋ - ଶୁଣ୍ଟା - ତାନ୍ତ୍ରି  
 ଅଛି - କେହିତ - ଅଜାହନତିତ୍ତୋ - ଶୁଣ୍ଟି - ଫିଲ୍ - ଅଧିକ  
 ଦେଖାନ୍ତି - । ଅନ୍ତରୁତ୍ତୋ - ବିଜୁମ୍ଭୁ - କିମି - ଗ୍ରେଗ୍ - ତାନ୍ତ୍ରି  
 ତୀରାତି - ନିଜେତି - ବଜାମାରି - କାହିଁ - ମିନିଲ୍ -  
 ନୈବନ୍ଧାତ - ବକଳାତ - ନେତ୍ରବ - କମ୍ପ୍ୟୁଟିଂ - ନେପାଲ - ।

ତୈଣ୍ଡର ବବନ୍ଧାତ - ୨୦୯୩ - କିମି - ଅଟ୍ଟି - ଶୁଣ୍ଟା  
 କାଲ୍ପନି - ବକଳାତ - ନେତ୍ରବ - ଏବା - କାମିଲ୍ - । ଦେଖାନ୍ତି  
 ଚାହିଁ - ବବନ୍ଧାତି - ମେଟ୍ରୋ - କ୍ରିକ୍ଟିଂ - ଅହାତି - ଅଭିନବ ଦ୍ୱାରା  
 ବକଳାତି - କାଲ୍ପନି, "ତ ଗତିବିଧି କିମି କିମି ଏବା ପାଞ୍ଜିଲିଙ୍କି  
 ଆଟ୍ରି - ଅବଳ - ପଦା - ମାତ୍ରାବ - କାଲ୍ପନି, "ମାତ୍ରାବିନ୍ଦୁ ଓ ହୁ  
 କ୍ରିକ୍ଟିକାନ୍ତି - ନିଜିମି - ମାତ୍ରାବିନ୍ଦୁ - କିମି - ଉତ୍କଳ ଦାତାତି -  
 ଶୁଣ୍ଟି - କ୍ଲାଇପ୍ - ନେମା" ।

ବକଳାତି - ଶଲମ - ବିଜୁମା - ନିଜିମି - ପାଞ୍ଜିଲି - କାଲ୍ପନି  
 ନେତ୍ରବ - ବକଳା - ବାମ - ମେ, ନିରାକାରି ମି - ନିଜାନ୍ତି  
 ମାତ୍ରାବିନ୍ଦୁ - କାହିଁ । ଜାତିକୁ - ନିରାକାରି - ବଜାମାରି ପଦା  
 ବକଳାତି - କାଲ୍ପନି - ନିଜିମି ।

ନିଜିମାରି - ଅଭିନବ - , ଅଭିନବାଜାରି - ନିଜାନ୍ତି  
 ନିଜିମାରି - ନିଜିମାରି - ଦାତାତି - - ଦେଖାନ୍ତି  
 ଏବା - ଅଭିନବ - ଏବା - ଅଭିନବ - ଏବା - ବଜାମାରି ।

।  
বাজার, কাজ, শিল্প, মুদ্রা—  
পাইং অন্ডেস্ট্ৰু— সমী— কান্দি— কুষ্টিয়ান্দ্ৰ— আগুণ—  
লাওশ— । অভিয়া— পুরাণ— তাহ— কেওড়া— পুরাণ্যানু  
বৃক্ষাণ্য— তানত— অলু— বুক্স— মু— ~~কেওড়া~~  
~~পুরাণ্যানু~~— মেডিনো— তা— বৃক্ষবুৰ— মাত্রিবৃ—  
কীৱ— কু— কল । তাঙ্গুৰ— লজ— লজ— তাঙ্গুৰ  
বিশ্ব— কু— কঙ্কাল— সাধুৰ— সহ— বৰানু—  
বিশ্বিকানু— ঘৰট্ৰো— ভিতৰত আকুল— বৰিশ্বিকু—  
কঞ্চক— লোক— লোক— নিষ্ঠৰজাননু— জ'ল, দাখৰানু  
ধূলি— অকু— কান্দিৰ— লোকৰ— আগুণৰ— আকুৰ—  
তাঙ্গু— কঞ্চক— লোক— লজ— লোক— নিষ্ঠৰজনু— অকু—  
নিম্পিৰ— লোক— সহ— দুৰ্গা— ওড়েৰ— কু—  
কঞ্চক— কু— কেওড়ি— কলানু— আলতা— কেওড়ি—  
লৌকি— কু— জ'ল— সুকুণ্ডল— কুশুৰ— কুশুৰ  
চৈ— কান্দি— "এ, নিষ্ঠৰজনু— অকু— নিম্পিৰ—  
কেওড়ি— সহ— দুৰ্গা— ওড়েৰ— কু— । কঞ্চক—  
অকু— কেওড়ি— কু—  
ওড়েৰ— অকু— দুৰ্গা— কেওড়ি— কু— ।

• विद्या - श्रद्धा - वाच - अर्जुन - महाभारत;

सर्वविजयी - शूष्मा - विनोदः ।"

त्रिक्षिण - वाग्मि उपवास - अध्यात्मा - परमा आवा  
 रात्रि - वायो देवि डाक्ती, लक्ष्मी - विश्वा विश्वा  
 रुद्र - रुद्रि - उपवास - वाग्मि: " विद्या - द्वा - अर्जुन  
 धर्म, अश्विनि - सर्वविजयी - शूष्मा वा - द्वा द्वा -  
 शूष्मा - अश्विनि - विश्वा, विश्वामित्र - महाभारत  
 विक्षिण - द्रग्नि - दुर्घटा - द्विव - अवश - महाभू  
 द्वीर्ण शूष्मा - द्रुवा - वा - द्वात्मवास - द्वात्म  
 विश्वा - विश्वामित्र - द्वात्मवास - द्वात्म ।

द्वात्म अवश्वा अवीव - द्वा - अवश - मात्रिकुमारी  
 द्वात्म - शूष्मा द्विवात्मवास - द्वात्म - द्वात्म - उपवास  
 द्वात्मवास - द्विव - द्विवात्मवास - द्वात्म - द्वीर्ण  
 वाग्मि - द्वात्म - द्वात्म - द्वात्मवास - द्वात्म  
 वाग्मि - द्वात्म - द्वात्म, द्वात्मवास - द्वात्मवास द्वात्म  
 द्वात्म - द्वात्म - द्वात्म - द्वात्मवास - द्वात्म  
 द्वात्म - द्वात्म - द्वात्म - द्वात्मवास - द्वात्म ।

द्वा वाग्मि अवश्वा - द्विवात्मवास - द्वात्म - द्वात्म  
 द्वात्मवास - द्वात्म - द्वात्म - द्वात्म - द्वात्म  
 द्वात्मवास - द्वात्म - द्वात्म - द्वात्मवास - द्वात्म  
 द्वात्मवास - द्वात्म - द्वात्म - द्वात्मवास - द्वात्म

ଅବେଳା ।

ଆମିଦା— ଲୋ— ଲୁଣ— ହେ— ନାରୀ— ମାତ୍ର—  
 କୈ— ଅବାଶପାନକୁ— କାଟିଥୁ— ନିଜିବ— ନିଜିବ—  
 ନିଜାତୁଳବ— ଅଛୁ— ବଗଳି— କୁହୁ— ଅନ୍ଧିଷ୍ଠ— ।

ନିମ୍ନ— ରୁ ବମ୍ବିକୁ—, ନିମ୍ନବାତ— ଉପବିଲ୍ଲି— ଅମ—  
 କାହି— ଶାଖ— ଅବାଶ— ବନାଇବ— ଚାଲୁଛ— ଭୂଷାନ  
 କାହି, କାହିବ— କୁହୁ— ବିଶ୍ଵାସ— ଯୁଧିଷ୍ଠିରଙ୍କୁଣ୍ଡିବ— ତା—  
 ଅନ୍ଧିଷ୍ଠ— ଅନ୍ଧେ— ଶେଷ— ଜାତ— —ଶବ୍ଦ— କାହି— ।

ଅନ୍ଧାରକ— ପାହିତୁଳବ— ଅନ୍ଧାର— ବନାଇ— ନିର୍ମିତ  
 ଦ୍ୱାରାଲୀବ— ପାଦ— ଅନ୍ଧେ— ଅନ୍ଧା— କୁହିଲି ଅନ୍ଧ  
 ନିମ୍ନ— କୁହିଯ— ପାହିଲୁ—, "ଏ ବନାଇ, ବନାଇ....  
 ଅନ୍ଧିଷ୍ଠ— ଚା— ରି— ଦୂର, ଦେଖିବ— ଅନ୍ଧି— କୁହୁ....।

ଉପକଳ— ଅନ୍ଧ— କୁହି— ବନାଇ— ହାତ— ନିର୍ମିତ— ଅନ୍ଧା  
 କାହିବ— ଦୂରବ— କୁହୁ— କୁହିଲି କୁହୁ— କୁହୁ—  
 କୁହୁ— ସମ୍ମର୍ଦ୍ଦି— ଜାହ— ।

ବନାଇ— କୁହି— ଅନ୍ଧବତ— ଦେଖି— ପାହିଲୁ— ଅନ୍ଧି—  
 କାହି— ଦୂରକୀ— କୁହି— ନିର୍ମିତିରଜବାବ— କୁହୁ—  
 ଦୂରକୀ— ନିର୍ମିତ— ବନାଇବ— ଅନ୍ଧି— ଏହା— ଲାଗି  
 ଦୂର— ନିର୍ମିତ— କାହି— ଅନ୍ଧି— ନିର୍ମିତ— ଅନ୍ଧି—  
 ଅନ୍ଧି— କୁହୁ— ନିର୍ମିତ— ନିର୍ମିତ— ନିର୍ମିତ— ଦୂର—

अले । अट्टा- अआमत- त्रि- उपन- उपरो  
 हावूकीडिक- निम्बु- केलु- त्रि- निम्बुर-  
 रकव- अआमत- अआमत- त्रिल- , निम्बुर- उपरो  
 उपरो- कडाळ- → निम्बुल- निम्बुल- → उपर-  
 लाकव- चवलि- दृष्टि- वगविल- जनि- उपर-  
 उपर- हावूकीडिक- निम्बुल- → त्रि- उपर- उपरो  
 कडाळ- निम्बुल- अखिल- , त्रि- उपरव- अआ  
 उपरो- "उपर- ... ए उपर- क-ठ- जाल- त्रि ।  
 वंडाल- अआ- निम्बुर- निम्बुल- उपरव उपर-  
 लाकव- त्रिव- वगविल- लाकव- लाकव- वंडाल- उपर-  
 निम्बुर- अखिल- उपरो- उपरो- जावड- दृष्टि-  
 अखिल- वगविलि- विविल- । अखिलिडिक- अआमत-  
 अखिल- वंडालव- त्रिव- उपर- चालि- विविल- ;  
 उलेक्ष- त्रि- उपरव- वगविल- उपरो- उपर-  
 उपर- निम्बुल- त्रि- उपर- उपर- निम्बुल-  
 उपरव- उपरो- उपर- निम्बुल- उपर- उपरव-  
 उपर- त्रि- उपर- निम्बुल- उपर- उपरव-  
 उपर- वंडाल- उपरो- अलेडा- वगविल-  
 निम्बुल- विविल- उपर- त्रि- उपर- उपरव-

କାମାଳ ।

କାମାଳ → କେବେ ପିଲିର → ଏବେବ → ଆହୁର ମର  
 ଦିକବାବ → କାହିଁ → କିମ୍ବା → ଆହୁ ଅଟି → କାହିଁ  
 କାହିଁ → ମାତ୍ର, "ଏ ଶାକିଲୋ" . . ଆହୁ → କାହା - ଏ ।  
 କାମାଳ → କାମାଳ → କୁଣି → -କୁ - କିମ୍ବାର → ମେହା  
 ମି - ମିଳିର - ଏବେଲି - ଚାହିଁ - କୁମ୍ବା - ଚାହିଁ -  
 ଆହୁରିବା - କୁଣିବ - ଆହୁର - କୁମ୍ବାରି - ଆହୁର  
 ମିଳିବ - ମିଳିବ - କାହିଁ - । କାହିଁ - କାହିଁ -  
 କାହିଁ - ନିଷାଳି - ଏବେବ - ଆହୁର - ମର - ତଳାର  
 କାହିଁର - ମର - କାହିଁ । କାହିଁରିବ - → ମାହିର  
 କାମାଳ → କାମାଳ → ମରି - କାହିଁର - → ମରିବ  
 ମାହିର - → କାହିଁ - ମରି - ଆହୁର - ମିଳିର - ଏବେଲି  
 ନାହିଁ - କିମ୍ବା - ମରି - କାହିଁ - ଆହୁରି - ।

କାମାଳ - ଉପନବ - ଆହୁ - ମାହି - ଆହୁ - କାମାଳ ।  
 କିମ୍ବା - କାହିଁରିବ, ଆହୁ - ଆହୁରି । କାହିଁ - ମାହିର  
 କାହିଁ - ନିଜା,  କାମାଳ - ଆହୁରିବ - ମିଳିର ଏ ଆହୁରି  
 କିମ୍ବା - କାମାଳ - ଆହୁରି - ଏବେଲି - ମିଳି - ଆହୁର  
 ମିଳିର - → କାହିଁ କିମ୍ବା - ଆହୁରି - ଆହୁରି - ମାହି  
 ଆହୁରିକାହିଁ - ମିଳିରିବ - କିମ୍ବା - କାହିଁ - ମାହି -  
 କାହିଁ - ଆହୁରି - ଏବେଲି - ଆହୁରି - କାମାଳ

ବ୍ୟୁଭବ - କିମ୍ବାତ୍ରି - ଅଗିଲୁ - । ଅଭାନ୍ତିଳ ଅପବ  
ଦ୍ରୁଷତ - ତୀ - ଲୁହାତି - ଚକ୍ରପବର - ଡିଲିକ୍ - ଶାହୁ  
ଶାହୁ - ଡିଲିକ୍ - ମେହାତୁଳୁ - ତୀ - ବର୍ଷାତ୍ର - ବଗିଲୁ -  
ତୀ - ମିଳିବି - ଏବୁବ - ମବର - ଡିଲିବଜ୍ଞ - ମବାବ-ଲାହୀ  
ତୀ - କାଠିବଜ୍ଞ - କୁଣ୍ଡା - ବଗିଲୁ - କିମ୍ବା - ତାଳ - କାଳ  
କାଳ - ବଳ - ଫି - ଉପବଳି - କାଠିବଜ୍ଞ - କୁଣ୍ଡା - ବଳର  
ବଳ - ନାଢ଼ମ - କୁଣ୍ଡାତ୍ର - କୁଣ୍ଡାତ୍ର - କୁଣ୍ଡା - ଆଗତ  
ଆଗତ - ଏ ଏ - ।

ମାଲିକିତୁତିକ୍ - ଅଶ୍ଵମତ - ମାଲିକ - ଅନ୍ଧାତ୍ର - ନ୍ଯା - ନନ୍ଦା  
ନନ୍ଦା - ଶିଥୁ - ଅନ୍ଧାତ୍ରିକ - ତାପଟି - ବାବୁଲ - । ଜୁଲାତ୍ର  
ଜୁଲାତ୍ର - ଛୁଟ - ମୁଖ୍ୟମାତ୍ରିକ - କୁଳ - ମୁଖ୍ୟ - ମାଲିକ -  
ମାଲିକ - ଲାହୁ - ତୀ - କୁଣ୍ଡା - ଫି - (ମିଳିବଜ୍ଞ) : "କୁ ଡାଖିଲୁଛି  
କୁଣ୍ଡା କୁ - ଅନ୍ଧାତ୍ର - କାଳ - ।

କାନ୍ଦିଲାତ୍ର - କୁଳ - ମୁଖ୍ୟ - ମୁଖ୍ୟିଙ୍କ - କାଳ - ବରମା  
ବରମା - କାନ୍ଦିଲାତ୍ର - ତୀ - ମୁଖ୍ୟ - ମାଲିକ - କାଳ - ମାଲିକ  
ମାଲିକ - ଶିଥୁ - , ମିଳିବି - କାଳ - କାନ୍ଦିଲାତ୍ର - କାଳ - ମିଳିବି -  
କାନ୍ଦିଲାତ୍ର - । କାନ୍ଦିଲାତ୍ର - ମାଲିକ - କାନ୍ଦିଲାତ୍ର - କାନ୍ଦିଲାତ୍ର  
ମିଳିବି - କାନ୍ଦିଲାତ୍ର - ମାଲିକ - କାନ୍ଦିଲାତ୍ର - କାନ୍ଦିଲାତ୍ର - କାନ୍ଦିଲାତ୍ର  
କାନ୍ଦିଲାତ୍ର - ଅଶ୍ଵମତ - କାନ୍ଦିଲାତ୍ର - କୁଣ୍ଡା - କାନ୍ଦିଲାତ୍ର -  
କାନ୍ଦିଲାତ୍ର - କାନ୍ଦିଲାତ୍ର - କାନ୍ଦିଲାତ୍ର - କାନ୍ଦିଲାତ୍ର - କାନ୍ଦିଲାତ୍ର

କିମ୍ବା କିମ୍ବା— ତୁ କିମ୍ବା ? ”

କାନ୍ଦିଲ - ବାହୀତ - ଅମାର - କାନ୍ଦିଲ - ଶୁଣି - ବାହୀ  
 କାନ୍ଦିଲ - କାନ୍ଦିଲ - କାନ୍ଦିଲ - କାନ୍ଦିଲ - ୧୩ - କାନ୍ଦିଲ -  
 କାନ୍ଦିଲ - କାନ୍ଦିଲ - କାନ୍ଦିଲ - କାନ୍ଦିଲ - କାନ୍ଦିଲ - କାନ୍ଦିଲ -  
 କାନ୍ଦିଲ - କାନ୍ଦିଲ - କାନ୍ଦିଲ - କାନ୍ଦିଲ - କାନ୍ଦିଲ - କାନ୍ଦିଲ -  
 କାନ୍ଦିଲ - କାନ୍ଦିଲ - । କାନ୍ଦିଲ - କାନ୍ଦିଲ - କାନ୍ଦିଲ - କାନ୍ଦିଲ -  
 କାନ୍ଦିଲ - କାନ୍ଦିଲ - କାନ୍ଦିଲ - କାନ୍ଦିଲ - କାନ୍ଦିଲ - କାନ୍ଦିଲ -  
 କାନ୍ଦିଲ - କାନ୍ଦିଲ - ।

ଦେବତାଙ୍କର ଉପାୟଙ୍କର ନାମ - । ଏହା - । ସମ୍ମାନିତ  
ବାଷପାତ୍ର - ଅଶ୍ଵରମୁଖପାତ୍ର - କୁଣ୍ଡଳିଜନନ - ବାହୁଦୂଷ  
କରେ, ଲଗାତି - ମାତ୍ରିଣୀ - ଅର୍ଦ୍ଧ - କର୍ମି - କୁଣ୍ଡଳ ବାହୁଦୂଷ  
ଲାଭକାର - ବାହୁଦୂଷ - କୁଣ୍ଡଳ ।

ବାହୁଦୂଷ - ଦେଖି - ଅବଦ, ନିରମଳ - ବିନ୍ଦୁଜାନନ - କାନ୍ଦାର - କାନ୍ଦା  
ନାମ - ଅନିକିତ, ଅନିତ - ନିତୀ - ବିନ୍ଦୁତ୍ତମା - ଅନ୍ତା - କାନ୍ଦା  
ଲାଭକାର - କାନ୍ଦା - କାନ୍ଦାର - କାନ୍ଦିତ୍ର - କାନ୍ଦିତ୍ର - ତିଥିପାତ୍ର  
ନାମ - ନିରମଳ - କାନ୍ଦିତ୍ର, ଅନିତ ଅନ୍ତା କାନ୍ଦା - କୁଣ୍ଡଳ  
କୁଣ୍ଡଳ - ନିରମଳ - ଏହା - କୁଣ୍ଡଳ - କାନ୍ଦିତ୍ର - କାନ୍ଦିତ୍ର  
କୁଣ୍ଡଳ - କାନ୍ଦାର - କାନ୍ଦାର - କାନ୍ଦାର - । । - ବିନ୍ଦୁ  
ନାମ - ଚିତ୍ତିକ - କାନ୍ଦା - ବିନ୍ଦୁତ୍ତମା ନିରମଳ - କାନ୍ଦିତ୍ର - କାନ୍ଦା  
କାନ୍ଦିତ୍ର, - କାନ୍ଦାରମାଳ - କାନ୍ଦା - କାନ୍ଦିତ୍ର - କାନ୍ଦା - ନିରମଳ  
କାନ୍ଦା - କାନ୍ଦାର - କାନ୍ଦାର - ନାମ ।

ନାମକ - କାନ୍ଦିତ୍ର - **(ନିରମଳ)** - ନାମ - କାନ୍ଦା - କାନ୍ଦାର - ନାମ ।  
ନାମ - କାନ୍ଦା - କାନ୍ଦାରମାଳ - କାନ୍ଦାର - କାନ୍ଦାର - କାନ୍ଦାର  
ନାମ - କାନ୍ଦାର - ନାମ - । । ଆକାଶମାନିତ - ନାମ - ନିରମଳ  
ନିରମଳ - କାନ୍ଦାରମାଳ - ନାମକାନ୍ଦାରମାଳ - । ନାମ - କାନ୍ଦାର  
ନାମ - ତିଥିପାତ୍ର - ନିରମଳ - ନାମକାନ୍ଦାରମାଳ - । ନାମ - କାନ୍ଦାର  
ନାମ - କାନ୍ଦାରମାଳ - ନାମକାନ୍ଦାରମାଳ - ନାମକାନ୍ଦାରମାଳ - ।

ତାଙ୍କୁ - କିଣ୍ଟି - ତାଙ୍କିବ - କାହାର - ଆମେ - ଏହି -  
 ମାନୀ - ଏହି - ନିବିଳାତ - ଲୋକର - ତଥା - ଅଧିକ - ଯାହା -  
 ଏହି - କୋଣେଇବ - ଚାହୁଁ - କାହାର - ମାନୀ ।  
 କିମ୍ବାଗ - ଆମ - ଯୁଦ୍ଧ - କାହିଁ - କିମ୍ବାଗ - ନିବିଳାତ - ଯାହାର  
 କୁଳାତ - ନିବିଳାତ - କିମ୍ବାଗାର - ଆମାର - କାହିଁ - ତାଙ୍କୁ -  
 ଆମେବାବ - ଯବା - ଚାହୁଁ - ବଜାର - ବାହୁର - କୋଣେଇବ -  
 ନିବିଳାତ - କୁଳାତ - ବାହୁ । ତାଙ୍କୁ - ଏହି - ପ୍ରକଳ୍ପ -  
 ଆମୁଖ - ମାନିବାବ - କାହାର - କାହିଁ - କୁଳାତ - ନିବିଳାତ  
 କାହିଁ - ବିଦି ... - ବିଦି ସୁଧି - ନିବିଳାତ - କାହିଁ - , ପ୍ରକଳ୍ପ -  
ତାଙ୍କୁ କିମ୍ବା - ଏହି - ଏହି - ଏହିମିଳି - କାହିଁରିଲି  
 ଅଥ - ଏହି - କିମ୍ବା - ବାହୁ - , ତାଙ୍କିବ - ଆମାର - ବାହୁ -  
 କୁଳାତି - କାହାର - ଯବା - କୋଣେଇବ - ନିବିଳାତ - ଏହି - ଏହି -  
 କାହାର ; "ଆମେହୁରୁସ - ପ୍ରକଳ୍ପରୁ ନିବିଳାତ ଦେଖି - କାହାର -  
 ଆମୁଖ - ତାଙ୍କୁ ; ଏହି - ଏହି ଏହି - ଏହି - କାହିଁରୁ - ଏହି ॥  
 କୁଳାତାର - ଏହା - ମାନିବିଲିବା - ଆମାର - ଏହି - କୁଳାତ  
 କାହିଁ - କାହାର - କାହିଁ - ବାହୁର - ଆମୁଖ - ଏହି ;  
 ଏହି - ଏହି - କାହାର - ଏହି । ବାହୁ - କାହାର - ଯବା  
 ଏହି, ଏହି - ଆମାର - ଏହି - କାହାର - ।  
 ଆମାର - ଏହି - ଏହି - ଏହି - ଏହିମିଳି - ଏହିମିଳି - ଏହିମିଳି -  
 କୁଳାତାର - କାହାର - ।

लुक्किया - विजया - तर्हि काबिरू - । देखलूवा -  
 आदिलाल - शिरि - द्वारा - देव - देखलूवा - अदि - अदि -  
 वशक दुर्घानि - अदिल । ती - अलूल - कालिवलि -  
 उच्छिर - चमालि - छोल - शु - गालूलूवा - आपूलू चिपूल  
 लिलि - आलिलूलि - लाकलि - द्वारा - द्वारा - लालि -  
 लूलूला - लालूल - लालूल - लालू - शीलू - ती - लालू  
 लालिले - लालूलूलू - लालूलि - द्वारा - अलूल - लिलिले  
 दुलूलूलि - लालूल लालूलू - लालू - लालू । निवालूलू  
 दुलूलूलि - लालू - लालूलू - लालू - लालूलू - लालू  
 दुलूलूलि - लालू - लालूलू - लालू - लालू - ला�लू  
 लालूलू - लालू - लालू - लालू - लालू - लालू - लालू  
 लालूलू - लालू - लालू - लालू - लालू - लालू - लालू  
 लालूलू - लालू - लालू - लालू - लालू - लालू - लालू  
 लालूलू - लालू - लालू - लालू - लालू - लालू - लालू  
 लालूलू - लालू - लालू - लालू - लालू - लालू - लालू  
 लालू - लालू - लालू - लालू - लालू - लालू - लालू  
 लालू - लालू - लालू - लालू - लालू - लालू - लालू  
 लालू - लालू - लालू - लालू - लालू - ला�लू - लालू  
 लालू - लालू - लालू - लालू - लालू - लालू - लालू  
 लालू - लालू - लालू - लालू - लालू - लालू - लालू  
 लालू - लालू - लालू - लालू - लालू - लालू - लालू  
 लालू - लालू - लालू - लालू - लालू - लालू - लालू



ଶିଖ ବାଜାରୀ - ଅଳ - ପେଟ - ଜୀବ - ପାତଙ୍ଗରୁ କଣ  
ଚନ୍ଦ୍ର - ଛାଡ଼ି କାହେ, " ଆଜି - କେବଳ - କାହିଁ । ଆଜି -  
ବାହୁଦ୍ରୋଧ - ଅମ୍ବାଲ - ହୁଣ୍ଡି - । ହୁଣ୍ଡି - ଛାଡ଼ିଲେ - ଉଷ୍ଣବତ୍ -  
କୁଠିବଂ ଘର - ବକାରା ଲୋହ - କବନ୍ଧ - ? ଆଜି - ବରତ ଗୋଟିଏ  
ଶାରୀରିକ - ବିଜି - । "

ଦୁଃଖମିଳି - ଶୁଣ - ଭାଷାର - ଘରବା - କହୁଥା - କୁର୍ବା ଧାରା  
ଦୁଃଖ - ଦୁଃଖମିଳି - ଅକାଶ - ଅକାଶମୁଖ - କାହିବିର - ଲାଲିଲା ।  
ଦିନମାତ୍ର କହୁଥା - କୁଷମିଳି - କିମ୍ବଳ - ଶିଥିଲ - ନିଅନ୍ତର ଦୁଃଖ  
କାମାଜି - କାମା - ନିମ୍ନିଲ - । ନିଅନ୍ତର ଦୁଃଖ - କାମି -  
କାମିଲିଲ - ଦୁ - କହୁଥା - କାମି - କୁଟି - ଲାଲିଲ - କାମି ଦୁଃଖ  
କହୁଥିଲ - ଦୁ - କହୁଥା - ଅବଳ - କାମି ଦୁଃଖିଲ - ଦୁଃଖି -  
କାମିଲା - । କାମି - ଦୁଃଖ - ଦୁଃଖି - ଦୁଃଖ - ଅନ୍ତର -  
କାମି ଦୁଃଖ ଦୁଃଖିଲ - କାମି - ଅନ୍ତର - କାମିଲ - ।  
ଅଟି - ଅନ୍ତର - ଦୁଃଖିଲ - କାମି - କାମି - ଦୁଃଖ - ଦୁଃଖ - ଦୁଃଖ  
ଦୁଃଖ - । ଅନ୍ତର - କାମି - ଦୁଃଖିଲ - କାମି - ନାହିଁ - ନାହିଁ -  
କାମି - କହୁଥା - କହୁଥା - କିମ୍ବଳମାତ୍ରକାଳ - କାମା - କାମି ।  
ଦୁଃଖମିଳି - କହୁଥା - ଅଟି - କାମି - କାମି - କାମି -  
ଦୁଃଖମିଳି - ନିମ୍ନିଲ - ନିମ୍ନିଲ - କାମି - କାମି - ଯଦିମାତ୍ରକାଳ -  
କାମି - କାମି ଦୁଃଖମିଳି - ଦୁଃଖି - କାମି - କାମି ଦୁଃଖ -  
ଦୁଃଖମିଳି - ନାହିଁ - କାମି - । ଦୁଃଖ - ଅଟି - ଯଦିମାତ୍ରକାଳ -





अन्तर्गत - नियमित नगर - लालू - बील - शब्द - अन्तर्गत  
 अव - विविहि - जीवि - जूता - अन्तर्गत - अलै - देव  
 लोड - । डेट - वक्तव्य - रसीद - वाट - आवै - अलै  
 अज्ञ - लोड - काल - शब्द - वाट - अवगृह - लालू - विविहि  
 लु - अविहि - अवश्यगत - नगर - छाँ - विविहि - विविहि  
 लु - अंतर्गत - लालू - अवि - दुर्ग - अवश्य - अवश्य  
 विविहि; अर्जु - अवाद - अविहि अवाद - वर्ष - अवश्य  
 लु - उचिदास्त्रिय - । अर्जु - वर्ष - उचिदास्त्रिय - अंतर्गत  
 लिपि - निक - । अर्जु - निक्षेप - अवादव - वर्ष - अव  
 लिपि - निक्षेप - निक्षेप - वर्षवलि - लालू  
 अवाद - अवाद - अविहि - अवश्य कर्त्तव्य - अर्जु - निक्षेप  
 वर्षिय - अवाद - उपवास - अवाद - निक्षेप - अवश्य  
 लुवा - अवि - अर्जु - । अर्जु - वर्षवलि - लालू - वर्षवलि  
 अवश्य - अर्जु - । निक्षेप - अर्जु - अंतर्गतव - अवि -  
 निक्षेप - वर्ष - लालू - अवश्य - अवश्य - अर्जु - अंतर्गत  
 वर्षिय - अवश्य - अवश्य - निक्षेप - अर्जु - अंतर्गत  
 वर्षिय - निक्षेप - अवश्य - अवश्य - निक्षेप - अवश्य  
 लुवा - अवश्य - अवश्य - अवश्य - अवश्य - अवश्य  
 विविहि - अवश्य - अवश्य - अवश्य - अवश्य - ।  
 अव - अंतर्गतव - वर्षवलि - अवश्य - अवश्य - अवश्य

କହାନୀରେ - କାରି - ମାତ୍ରାକାଳ - କାରି - କାଲ, କାହା  
କାହା - କାହା - କୃତକାରୀ - ଅନୁଭବ - ପିତ୍ରକାଳ - କାଲ ଅନୁଭବ  
କାହା - କାହା - କୃତକାରୀ - କୃତକାରୀ । କାହା - କାହା - କାହା  
କାହା - କାହା - କାହା । ଅନୁଭବ - କାହା - କାହା - କାହା  
କାହା - କାହା - କାହା ।

କାହା - କାହା - କାହା - କାହା - କାହା - "କାହା" ।  
କାହା - କାହା  
କାହା - କାହା  
କାହା - କାହା  
କାହା - କାହା - କାହା - କାହା - କାହା - କାହା - କାହା -

କାହାକାଳ - କାହା - କାହା - କାହାକାଳାକାଳ - କାହା କାହା  
କାହା - କାହା - "କାହା" । କାହା - କାହା - । କାହା -  
କାହା - କାହା - କାହା - କାହା - କାହା - କାହା - କାହା -  
କାହା - କାହା - କାହା - କାହା - କାହା - କାହା - କାହା -  
କାହା - କାହା - ।

କାହା -  
କାହା - କାହା - କାହା - କାହା - କାହା - କାହା - କାହା - କାହା -  
କାହା - କାହା - କାହା - କାହା - କାହା - କାହା - କାହା - କାହା -  
କାହା - । କାହା - କାହା - କାହା - କାହା - କାହା - କାହା -

କଣ୍ଠ କଣ୍ଠ ପୀମାତ୍ର - ଲୋଟି- ଧାରିଟି- କାଳି- ୩- ପିଲାମା  
 କଣ୍ଠ ନଦୀ- ଧର- ୩.୮, ଲୋଟିକାଳ ପ୍ରାୟ- ପିଲାମାଜାଳ  
 ଶିଖିତାହାଲାଇ- ଧରିଟି- ବୁଝାଇ- ପରିବାହାଲାଇ- ପିଲାମା  
 ଅଧିକାଳ- । କାଲିଅଧିକାଳ- କାଳି- ପିଲାମା; କୀତର  
 ପ୍ରାୟକାଳ- ଧର- ପିଲାମା- କାଳ କାଳ- ପିଲାମା  
 କୁଟ୍ଟ- କାଳ- ।

- ଲୋଟିନାଥ- କାଳି- ଅଗ୍ର- ଅକ୍ଷେତ୍ର- ଅନ୍ତର-  
 କୁତୁହାଳ- ଲୋଟିନାଥ- କାଳି- ଅନ୍ତର- । ଅନ୍ତର-  
 ଅନ୍ତର- ଅନ୍ତର- ଅନ୍ତର- ଅନ୍ତର- । କାଳି- ଅନ୍ତର-  
 ଅନ୍ତର- ଅନ୍ତର- ଅନ୍ତର- ଅନ୍ତର- । କାଳି- ଅନ୍ତର-  
 ଅନ୍ତର- ୩୭୩- ଲୋଟିନାଥ- କାଳି- ଅନ୍ତର- । କାଳି-  
 ଅନ୍ତର- - ବୀଜନ- - ଲୋଟିନାଥ କାଳି- କାଳି- ଅନ୍ତର-  
 କାଳିକାଳ- ବୀଜନ- ୩୭୩- । ଲୋଟି- କାଳି-  
 ଲୋଟିନାଥ- ବୀଜନ- ଲୋଟିନାଥ- ଅନ୍ତର- ସୁରିଯୁ-  
 କାଳି- କାଳ- । ✓

ଲକ୍ଷ୍ମୀପୁର ମହାବିଦ୍ୟାଳୟ, ଲକ୍ଷ୍ମୀପୁର

'ଆମେଶ୍ଵିକ ପତ୍ର'

ଅଜମୀଯା ବିଭାଗ, ତୃତୀୟ ଶାଖାନିମିତ  
କାର୍ଯ୍ୟତଥୀ - ବ୍ୟବସାୟିକ ଅଜମୀଯା (SE) କାର୍ଯ୍ୟତଥୀ

କାର୍ଯ୍ୟତଥୀ ଜାର୍ଖ୍ୟା - 3014.

ଆମେଶ୍ଵିକ ପତ୍ର ବିଷୟ

ଅଜମୀଯା ଶିକ୍ଷେଣଙ୍କୋ ଏଟି ଜନଶୋଭାର ଜମାଜ୍ ଅନୁଷ୍ଠାନିତି  
ପ୍ରାଚୀନତାକାଳିତ ବର୍ଣ୍ଣିତ ଶିକ୍ଷେଣଙ୍କୋ ଏଟି ଗଲମ ସ୍ଵର୍ଗତ  
କର୍ମିବ ଲାଗେ ।

ପ୍ରଦ୍ରତକର୍ତ୍ତା

ଶ୍ରୀ କୃତ୍ତବ୍ୟାକାରୀ ।

ଶ୍ରୀବୋଲନ୍ଦ - ୧୧୫

ଶ୍ରୀ ବି. ବୋଲନ୍ଦରୁ : - UA-211-101-0112

ପଞ୍ଜୀୟନ ନଂ : - 21013241

Green  
✓



ଆସିଥିଲୁ ଆଜି କୁଣ୍ଡଳ ରେ ପରାବ ଅରହାର ଟ୍ରେନ ଆହି ଗେହେ ହୁଅଟର କେମାର କୋବ ଥିଲାନ୍ତି  
ବରକାରୀ ଧରନରେ ବିମା ଏଟା ଶ୍ରୀବିଜ୍ଞାନର ଆଲାପ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳେ ଆର୍ଥିକ ଓ ମୌଖିକ ଉକାଳ  
ଚାହୁଁ ଥିଲେ ବରକାରୀ କାମେରାର ଲଗତ ମେଗରୁନ ଲୋନରେ ଗେହେ ହୁଅଟର ବିମାଯେ କଥା ପାଇବୁ  
ଲାଗେ । ମେନରେ କଟି ପାଇଁ ବରକାରୀ ମିଛିକିମା ହାହି ଏଟା ଶ୍ରୀବିଜ୍ଞାନର ଆଲାପରେ ଏଠାଇଁ  
ଦୁଇ କମ୍ବର ବରକାରୀ କାର୍ବିନିମା ବୁଲେ କାଣେ । କଥାଟେ ଶ୍ଵରୁଷ ଲାଗେ ଲାଗେ ମେନ ଆରକ୍ଷରେ ଧାନରେ  
ଶାହୁଁ ପରିବଳ । ବରକାରୀ କାନେ ଯେ କାମ୍ପାନିଯ ପୁରୀନ କଲାନ୍ତି ମକା ବେଟାଟର ଆରାଯାଇବେ  
ଦୁଇ କମ୍ବର ମୋଳ ଆଦେ । ବିକ୍ରି ଆରାଯାଇବେ ଯେଠ ବରକାରୀ କାନେ ଆରକ୍ଷରେ ଧାନରେ ଏହିଟା  
ଗେହେ ହୁଅଟର ବିମାର ଆଶାର ହୋଇଲାନ୍ତି । ନିମ୍ନାନ୍ତ ପାନୀ ହୋଇ ଆରକ୍ଷରେ ଧାନରେ  
ଆମ ଶ୍ରୀବିଜ୍ଞାନର ଆଲାପ ପାଇଁ ଆହାର ପାଇଁ ପ୍ରକାନ୍ତ ଦୁଇଲାଙ୍ଗିମା ଯକ୍ଷମାର୍ଗାନ୍ତରୁଷିତ  
ବରକାରୀ କାର୍ବିନିମା ବନ୍ଦରେ ଲାଗେ । କମ୍ବର ବରକାରୀ କାର୍ବିନିମା ବନ୍ଦରେ ପାଇଁ ଆରାଯାଇବେ  
ବିଚନ୍ଦନ ଦେଇ ଶ୍ରୀବିଜ୍ଞାନର କାମ୍ପାନି ଆରାଯାଇବେ କାମ୍ପାନି ହୋଇଲାନ୍ତି । ବିଚନ୍ଦନ କାମ୍ପାନି  
ଦେଇ ଲାଗେ ବିଚନ୍ଦନ କାମ୍ପାନି ହୋଇଲାନ୍ତି । କାମ୍ପାନି ଶିଳାନ୍ତ କାମ୍ପାନିରେ ଆହାର ଆଶାରରେ  
କାମ୍ପାନି ପିତାର କାମ୍ପାନି ହୋଇଲାନ୍ତି । କାମ୍ପାନି ଶିଳାନ୍ତ କାମ୍ପାନିରେ ଆହାର ଆଶାରରେ  
କାମ୍ପାନି କାମ୍ପାନି ହୋଇଲାନ୍ତି । କାମ୍ପାନି କାମ୍ପାନି ହୋଇଲାନ୍ତି । କାମ୍ପାନି କାମ୍ପାନି ହୋଇଲାନ୍ତି ।

ଶ୍ରୀବିଜ୍ଞାନ

চেষ্টা কৰিলে কিন্তু দুর্বল পৰা শৈৰু আৰু কুৱাৰ আৰু শিখালৰ মাত্ৰে তেওঁৰ জৈপীন  
কীট নিয়ে। প্ৰচন্ড শীতৰ ছেপঘণ্টা পাবল মুৰজে নেপথ্য মূলে গায়ে চৌক লৈ  
মৈপীন মাবলে আপুন চেষ্টা কৰিলো। মালজ কীট হৃষ্ট ধীৰিক কৈ এসে পদুই  
মুৰজৰ মৈপীন শৈৰু গাল। কি নেপৰ তলৰ পৰাই মূৰজে আৰু ওমাই কুঠো চার  
ধাৰলে হোৰ আনপৰ তলৰ পৰাই আইনা অনলে জুয়া কুয়া মানে চৰাইকে- তাক  
আছে। মাত্ৰ বৈত ওমাই আৰু ফৱীৰ কুকুৰ শকলৈহে আৰীনামাক মৌছল  
তাতে আবায় পৰি পৰি শৈৰু ইমান কেমান মুৰজৰ মেকনো কেলন নাইছল। অশুধা  
পৰি হে মাধ্যিবলগা ছল। তেওঁ পুনৰ মৈপীন মাবলে চেষ্টা কৰিলো, মিছ তেওঁতেও  
আবায় বৈচুয়ীক অংমোগ বীছিব হল। আইনজাওমাত্ৰ পৰি রেশতৈবিনা  
লাইতে মুৰজে ক্ষমতে পেপুৰা লাঁজা ক্ষেত্ৰে মানিন নেপৰ তলত নিশুল হৈ। কিন্তু  
তাৰ কুঠো ক্ষেত্ৰত দেখেন কীৱৰৰ দ্বেষাকৰ আলে। নেপথ্য তলৰ পৰাই মুঘঘন  
মূৰজ ধীৰিমোৰ ওমাই মানে ধৰণীধীৰিকীঘনৰ জৈ আলেখনেমালৰ লওতেও  
তাৰ বুকুঘনীচৰিংকো মাবলে। ধীৰিকীঘনৰ এগাল দৰ্শণীৰ বৈতে এক নীচৰ  
চোৱালীয়ে আৰু মানলে চাই আছে। কীৱৰ ধীৰিংমূজ দ্বেষাকৰ পাহুৰ ধোলা  
ধীৰিকীঘনৰ মেন তাৰ কোঠৈৰ ক্ষেত্ৰে আমাই আৰীছিল। কি নেপথ্য তলৰ  
তলৰ পৰা ক্ষেত্ৰে তিনওমাত্ৰে আবমাৰ ঠিকেই ধীৱৰ পাৰিছুল কিন্তু তিনওমাত্ৰে  
মুঘঘন ধীৱৰ পৰা নাইছু। ক্ষয়তে তাৰ লীৰ-হৃতকোৱা চেষ্টা পৰি গাল। তাৰ  
বুকুৰ স্বপ্নধীন শাকও কাঢ় গৈছুল। ক্ষেত্ৰে তাৰ জৈতৰ হৈ পৰিছুল মে  
অচিৰ্মুৰিয়ও পৰা নাইছু। ক্ষয়তে সি চুৰানুলৈ মুৰু হৈলো। অলপ পিছত  
নেপনীৰ পৰা সাব পাহু কেম্প ধীৱৰ হৈলো। বুকুতে মুঘু দ্বেৰ কিমীশুৰন কুমাই  
আলম অপোন হীঝে লোবলে সি। আইনা ধনো ধৰণীধীৰিকীঘনৰ বন্ধ আছে।  
চৰাইক তাকে আছে। বাঁও স্বৰত স্বাধীতে তে কীজাই। প্ৰজাৰ লগা কৰীবিচন্ত

পর্যায়ে কোষাখনে অংকন বাধক মনে গল। বাধক মনে পর আছি ত্রৈচং  
বুলঘনে উপরত লেগরত গীতার আজীবা অংকন উপরত চুরু পৌরল।  
এবর টেপনী ছেলে পিছত ঝুরলৈ পুনৰ জেপনী নাহে। আইকণে তওঁ লেগরত  
পজে বুল বাণে পঞ্চন লেপর তলত মেঝাল। লেপর দেয় ন থাকো তীব্রতা  
তৈর চুটামন পাত পঢ়িব লগে লগ চুরু পজা গঁড়ুব হৈ আছিছিল। আ  
শ্বেত বুল লেগরত গীতার আজীব লওঁতেই তাৰ ঝাইব পৰণ এখন ফটো  
লাই পৌরল। ফটোমন চৈছি তওঁ শিশুব তেই পীৱল। কোৱল তওঁ অলপ মেঝাত  
মুখ সপোনত। মুকুটী লোকীৰ ঐতে আছিলাথ এক। তোতমা তেওঁ ক্ষেত্ৰে কীপ  
পুনৰ ঝুচ ঝুচ খোই অন লোপন চিকে ঠাকে আছোন চাই ঝুঁৰে লেপর তলত  
মেঝাই শ্বেত শীৰল। তাৰ পৰা ওলাই যৌবন লজৰামেক ঝোভি আইগেও আহু  
আৰা নাছিল। বাঁতুৰা ছেয়া লৈকে তেওঁ অপেক্ষা কীৰবলগা হৈছিল। বাঁ  
অপেক্ষাৰ অণ্ডত চৰাইব কুতো শুনা আছতে, আৰামীৰ ঝাতো শুনা পাছতে তওঁ  
বিচনৰ পৰা হীঠি মোহিল। লীঠি মেই লগে লগে তেওঁ বিপুলৰ কোষাখনে গলা মেৰ  
তেওঁক অৰলৈ কথা বিৱিৰ কলে। বিপুলে তেক ঝীন লব পৰা নাছিল অৱশ্যত  
তেওঁক আছি হাতৈয়ান চৰালে কলে। বিপুলে তেওঁৰ কুলে হাতৈয়ান চৰালে ঝুৰলৈ  
পৰা খোঁকেজে সুৰজে লেপঘন শেকাৰী, লেগরত গীতার মৌল চাওঁ তেই  
ফাঁপঘনৰ ক্ষেক্ষে কোনো ঝুঁতু আছি নাপালো। কিন্তু ঝুৰজে হাতৈয়ান স্বচ্ছে,  
সাতোৱে চুই আনুলৈৰ কৰা হাতৈয়ান কিন্তু সামীক্ষক হ'ব পঞ্চে বুল তেওঁ বাঁৰৰ  
পৰা নাছিল। পিছতে তেওঁ বেজে এক ক্ষেত্ৰ ঝোভি আৰীন তেওঁৰ উতুৱাই ঘৰঘান  
খোই কৰলৈ নিমত বেজতে বেজ খোভি এমতামত তাৰে এহোন মুকুটী আছিল  
কিবা ঘুটনা গ্ৰহণ কৰিছি তে যেইজে শৰত যোঞ্চা হওয়া কীৰীছিল। কথা লৈ গঢ়া পৰা

পৃষ্ঠা-৫

শিখে পিছতে তেওঁকে আর একাত্ম যেই স্বীকারণে নকলীবলে ঘূরি  
যোঁ কীবলে। মৌচনের কামনাতে (শেষকীর্তি ও ক্ষমতা) আগ ঘোর  
ঘৰে দেওতে ফার্ভে ঘূরতে জীবলে। আর কাহাতে শেষকীর্তি পুরহে আর  
বিপুলে পুরুষ টাকাল দেওলে।

- সমাপ্ত -

ଲକ୍ଷ୍ମୀପୁର ଶ୍ରୀଵିଦ୍ୟାଳୟ, ଲକ୍ଷ୍ମୀପୁର -

ବାଣ୍ସମିଳିକ ପରୀକ୍ଷା ରେଖ

ଫୋନ୍ ନଂ : - ୨୯୮୨

ଜୋଗେନ୍ଦ୍ରନ ପଦବ-ଧିକ୍ଷତଃ - ହୃଦୀ - ମାତ୍ରା ଛୋଟଖୀ -

ନାମ : - ମିଲିଙ୍କଣ - ୨୯୨୯

ପ୍ରେନ୍ଟିନ୍ : - କ୍ଲାଉଡ ଭୂତୀକ - ଶକ୍ତମିଳି -

ଫୋନ୍ ନଂ : - UA - 211 - 101 - 0095

ଅଭ୍ୟାସ ନଂ : - 21013227

ଧାରା : - ASM - SE - 3014

অসমৰ বিৰাম- অসম দুর্বিশ- জাঙ্গত দুজনী- সমৰ্পণ  
দুষ্প্ৰাপ্তি- আছিল। দুষ্প্ৰাপ্তি- দুজনীৰ নাম তিনা- আকৃ-  
তিম আছিল। দুজন- আছিল আতি ক্ষণবল- আপ-  
অকলেৰ কথা কাজৈ আৰিছিল। তিন আপ- দিবাপ-  
ৱাপ- অঞ্চলে স্থৰাবৰ্ষে প্ৰেজন্ট আতি কৰি- তিন-  
পথ ক্ষেত্ৰ- কলাপ। যুৱা পিছফালে দিবিশ বৰ্ণনৰ-  
আক- আছলী- লাউ, দুয়ুলা- জৈবণ- দুলিপুৰী-  
আতি কৰি- কৰি- কৰিবলৈ দিয়ে। দুশ্মণ-  
বৰাহিণীও পৰমবৎ বৰ্ণনৰ আতি কৰিবলৈ। লগত-  
তিন আপ- দিবা ক্ষেত্ৰে পথবৎ দীৰ্ঘ-  
আতি কৰিবলৈ সহয় কৰিবলৈ। ফটিখ- দুলা,  
দীৰ্ঘ কৰিবলৈ সহয় কৰিবলৈ। ফটিখ- দুলা,  
তিনজন দুলিপুৰী কৰি আৰিছে। বাতি দুষ্প্ৰাপ্ত-  
বৰাহিণী দুজনে কাজ- কৰি- প্ৰেজন্ট-  
জৈবণৰ দী নিচেও দুষ্প্ৰাপ্ত কৰিবলৈ দুলত-  
আকৃ কৰিবলৈ- পথবৎ লগত কৰিবলৈ- দুশ্মণ।

জাতোক্তির : - অসম  
জুমালী - মেটিল, বুরীয়া - জাতোক্তি দুজনী - সমস্ত  
মিম মেটিল। হায়ালী - পুজীল নাম চি.ন. আও  
অকলো পাখ কাশ জীবিটিল। চি.ন. আও মিমস  
আক সঙ্গে ঝুঁকদিল দেওয়ালে ঝোটি কালি - চি.ন.  
পথ শুন - কালু। ঘৰত পিছুলে বিশিষ্ট বৰ্ণনা  
শোক - আচলী - লাও, পুরুষ - জীবন - জুলাইয়া -  
ঝোটি কালি - এজালু পোছিলে দিলে। ইত্যাপি -  
ব্যাহিষেও অসমত বৰ্ণনা ঝোটি কালিটিল। লগড় -  
চি.ন আও ত্রিম জাতোক্তি অসমত বীৰণ -  
ঝোটি কালু সময় কালিটিল। কাটিয়া - ছুলা,  
বীৰ কুলু, বীৰ কুল, অবশ্য কল অকলো - পাখ  
পিছুজুন চীলেও কালি জাতোক্তি। বাতি পুরুষ -  
চি.ন দুখে অকলো কাশ - কালি - দেওয়াল -  
জীৱন দি নিছেও মাঝে গোত্তুলা পুরুত -  
আও গোত্তুলা - অসমত পাখ কালিপলে - মৃগ।

ନୀରୁତିର ଜଳ - ଜ୍ଵାଳା , ରତ୍ନ ଝୁଲୁଳ ଡେଇଲ ।

ପୋଥ ଧୀର କିମଳ - ଅଶ୍ୟତ - ତିଳ ଆଖ କିମଳ  
ଧୀର କମଳ ଡେଇଲ । ହିଂସ ଦେଇଲକାଳ ଛୁଣ -  
ଛୁଣରେ କାହିଁଟ ପାଲ ଜଳ ଦୁଃଖ କିମଳି - ଚିପଳି -  
କାହିଁଏ - କାହିଁଲେ - ପାମଳତ - ମନ୍ଦିର - ମନ୍ଦିରରେ  
କାହିଁଏ - କାହିଁଲେ - ତିଳ ଆଖ କିମଳ - ଦେଇଲ -  
ଆଖ ଜୀବିତ ବାବି । ଆତିଥ କାହିଁରେ ଧର ଦୁଃଖ -  
ଧାରିଛୁ - ଅକଳେହେ କିମଳି - ଦୁଃଖ -  
ଦେଇଲକାଳିରୀ ଦେଇ ଜଳ - କାହିଁ - ଦୁଃଖ ଧାରିଛୁ ।  
ଦୁଃଖ ଦେଇଲି - ଧରି - ଆଖ - ଜୋପାଳୀ - ମୁଜନୀ -  
ଦୀରତ ଧାରିଲେ - କାହିଁଲେ - । ତିଳ ଆଖ କିମଳ -  
ଦୀରତ ଧାରିଲେ - କାହିଁଲେ - । କାହିଁଲେ - କାହିଁଲେ -  
କାହିଁଲେ - କାହିଁଲେ - । କାହିଁଲେ - କାହିଁଲେ -  
କାହିଁଲେ - କାହିଁଲେ - । କାହିଁଲେ - କାହିଁଲେ - ।

ପିନ୍ଧି - ପାଥାର ହୋଟ ଲୋକିବଳେ - ଶାତ୍ରେ  
ଦୁଇଲ୍ ଲାଗୁ - ବିଜ୍ଞାନ ଲାଗୁ ମିଳିବା - ପୌଷ -  
ଆମତ ପାଇଁଛିଲେ । ମିଳିବା ଦୁଇଲ୍ - କାହିଁ - କାହିଁ  
ଲୋକିଲେ । ଶାତ୍ରେ ମିଳିବା ହୋଇ ଲାଗୁ ଦୁଇଲ୍ -  
ଶାତ୍ରେ ହେବା - ଆଶୁରଙ୍ଗ ବିଜ୍ଞାନ ଲାଗୁ  
ଶୁର୍ବିନ୍ଦିଲ୍ - ଆଖି କଣେ - ଯାଥା ଦୁଇଲ୍କାର ଲୋକିଲ୍ -  
ଅନ୍ଧାଳେ କହି କବଳେ - ଲୋକି - ବିଜ୍ଞାନ -  
ଲୋକି କିମଳକ କିମଳ କିମଳ ଲାଗୁ - ଦୁଇଲ୍କାର ସବଳେ -  
ଆଶ । ବିଜ୍ଞାନ ମିଳିବା ଲୋକି କଣିମେ ଅଧିକାର -  
କବଳେ । ବିଜ୍ଞାନ ଲୋକି ମିଳିବା ଦୁଇଲ୍କାର - କିମଳ -  
ଅନ୍ଧାଳ - ରାତି । ଲୋକି କିମଳ ଅନ୍ଧାଳକୁ - ଅଧିକାର -  
କବଳେ - କଣିମେ ଲୋକି - ଅନ୍ଧାଳକୁ - ମିଳିବା ଶୁର୍ବିନ୍ଦିଲ୍ -  
ଅନ୍ଧାଳ - କିମଳ ।

ଲକ୍ଷ୍ମୀପୁର ମହାବିଦ୍ୟାଳୟ, ଲକ୍ଷ୍ମୀପୁର

ସ୍ଵର୍ଗାବ୍ିଦୀ ପାତ୍ରିଜୀବି ପାତ୍ର

ଶୋଣିତ :— ୧୯୮୯

ନାମ :— ମହେଶ୍ୱର ମାତ୍ର

ଶ୍ରେଣୀ :— ପ୍ଲାଟଫ୍ରେ ଛତ୍ରି ପାଠ୍ୟାବ୍ଦୀ

ଟ୍ରେଲନ୍ଡ୍ :— UA - 211 - 101 - 0084

ପଞ୍ଜୀୟନ ନଂ :— 21013217

କ୍ଲାସ୍ରତ୍ତେ :— ASM - SE - 3014

ଶୀଳିତା- ଶୀଳନାର ପଥ- ସମ୍ପଦ

ଅଧିକ- ଚାହାନ- ଅଟି- ଅବ- କଣ- ପାଇଁ  
ତୁମ୍ଭ- କାନ୍ତି- ଲକ୍ଷ- ଅବ- କଣ- ପାଇଁ  
ପାଇଁ- ପିତା- ପ୍ରେତୋଦ୍ୟ- କାନ୍ତି- ପାଇଁ-  
କାନ୍ତିରେ । ଶୀଳିତା- ପ୍ରେତ- କାନ୍ତି-  
ପିତା- କଣ- ପ୍ରେତକୁ- ଆମିକା- ପାଇଁ- କାନ୍ତି-  
କିମ୍ବ- । ପ୍ରେତକୁ- ଏତିପିଲ- ପାଇଁ-  
ପ୍ରେତ- କାନ୍ତି- ତୁମ୍ଭକୁ- ଅବ- ପାଇଁ  
ପିତାକୁ- ପାଇଁ- କାନ୍ତି- ଅଜାଦ- କାନ୍ତି-  
କିମ୍ବ- । କାନ୍ତି- ପ୍ରେତକୁ- କାନ୍ତି-  
କାନ୍ତି- କୁଳକୁ- କାନ୍ତି- କାନ୍ତି- ପ୍ରେତକୁ-  
କାନ୍ତି- କାନ୍ତି- କାନ୍ତି- କାନ୍ତି- ।  
କାନ୍ତି- ଆମିକା- କାନ୍ତି- କାନ୍ତି-  
କାନ୍ତି- ଏତିପିଲ- କାନ୍ତି-  
ପ୍ରେତକୁ- କାନ୍ତି- କାନ୍ତି- କାନ୍ତି-  
କାନ୍ତି- କାନ୍ତି- କାନ୍ତି- କାନ୍ତି-  
କାନ୍ତି- କାନ୍ତି- କାନ୍ତି- କାନ୍ତି-

କାହୁ — ଶାର୍ଦ୍ଦି ପିଲା ବନ୍ଧୁର ଶାଖାଦି—  
ଶାର୍ଦ୍ଦି କମଳାର୍ଦ୍ଦି — ପୂର୍ବର ବାଜି — ଚାନ୍ଦମରଦି—  
ଅଛାଟୁ ବାନ୍ଧୁର୍ଦ୍ଦି — ଶାର୍ଦ୍ଦି ଅବଳି — ଅଛାଟୁ—  
ଶୈତାନ ବାନ୍ଧୁର୍ଦ୍ଦି ଶାଖା— ଅବଳି ରାତି ପଢ଼ି—  
ପିଲା — କାଲ — ଶାଖା — ଶୈତାନ ବାନ୍ଧୁର୍ଦ୍ଦି—  
କାଲେ — ହୃଦୟବିଶିଷ୍ଟ — ଶାଖା — ରାତି — କାଲେ—  
ଶାର୍ଦ୍ଦି — ରାତିରାତି — ଚାନ୍ଦି — ଶାଖା ।  
କାଲେ — କାଲେ — ଶାଖା — ରାତିରାତି — କାଲେ—  
ବାନ୍ଧୁର୍ଦ୍ଦି — ବାନ୍ଧୁର୍ଦ୍ଦି — ଶାଖା — ରାତିରାତି — କାଲେ—  
କାଲୁମରଦି — କାଲୁମରଦି — ଶାଖା ଶାଖା—  
ଶାଖା — ନିର୍ବିଲ୍ଲି — ଶାଖା ଶାଖା । ଶାଖାଦିଶାଖା—  
କାଲୁମରଦି — କାଲୁମରଦି — ଶାଖା — ନିର୍ବିଲ୍ଲି — କାଲୁମରଦି—  
ଶାର୍ଦ୍ଦି — ଶାର୍ଦ୍ଦି — କାଲୁମରଦି — କାଲୁମରଦି — ଶାଖା—  
ଶାର୍ଦ୍ଦି — ଶାର୍ଦ୍ଦି — କାଲୁମରଦି — କାଲୁମରଦି — ଶାଖା—  
ଶାଖା — ଶାଖା — ଶାଖା — ଶାଖା — ଶାଖା — ଶାଖା —

ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ । ଅତ୍ୟନ୍ତମା ବାହିକ - ପ୍ରାଣକଳା - ଶିଖମ  
ଶ୍ରୀମଦ୍ - ଆମ୍ବାଦି - ୩ - ପିତା - ପ୍ରାଣକଳା - ।  
ଶ୍ରୀମଦ୍ - ଆମ୍ବାଦି - ପାତ୍ର - ପାତ୍ର - ଶ୍ରୀମଦ୍ -  
ଶ୍ରୀମଦ୍ - ଆମ୍ବାଦି - ପ୍ରାଣକଳା - ଆମ୍ବାଦି - ଆମ୍ବାଦି -  
ଶ୍ରୀମଦ୍ ।

ଶ୍ରୀ ପିତା - ଆମ୍ବାଦି - ପାତ୍ର - ଶ୍ରୀ - ଆମ୍ବାଦି  
ଶ୍ରୀମଦ୍ - ଆମ୍ବାଦି - ପ୍ରାଣକଳା - ଆମ୍ବାଦି - ବାହିକ -  
ଶ୍ରୀମଦ୍ - ପାତ୍ର - ଆମ୍ବାଦି - ପାତ୍ର - ଶ୍ରୀ -  
ଶ୍ରୀମଦ୍ - ପାତ୍ର - ଆମ୍ବାଦି - ଶ୍ରୀମଦ୍ - ବାହିକ -  
ଶ୍ରୀମଦ୍ - ପାତ୍ର - ଆମ୍ବାଦି - ପାତ୍ର - ଶ୍ରୀମଦ୍ -  
ଶ୍ରୀ - ପାତ୍ର - ଆମ୍ବାଦି - ପିତା - ଆମ୍ବାଦି - ପାତ୍ର -  
ଶ୍ରୀମଦ୍ - ଆମ୍ବାଦି - ପିତା - ଆମ୍ବାଦି - ପାତ୍ର -  
ଶ୍ରୀମଦ୍ - ଆମ୍ବାଦି - ପିତା - ଆମ୍ବାଦି - ପାତ୍ର -  
ଶ୍ରୀମଦ୍ - ଆମ୍ବାଦି - ପିତା - ଆମ୍ବାଦି - ପାତ୍ର -  
ଶ୍ରୀମଦ୍ - ଆମ୍ବାଦି - ପିତା - ଆମ୍ବାଦି -

— शास्त्रीय — विवरण कीकर — अंगद — शिष्यवाच  
कामग शृङ्खला — आर्द्ध — एवं उच्चारीकरण — अंगद —  
अंगद — अवाक्य — वग्नु — अनुस लेख — गुरु —  
आदि — शास्त्रीय — शृङ्खला — उच्चारण — उच्चारण  
पिलू — शृङ्खला — आर्द्ध — वाक्य — अंगद —  
शृङ्खलीवरित — अंगद — अनुस लेख — अंगद —  
तात्त्विक — शृङ्खला — आर्द्ध — वाक्य — द्वितीय अवधि —  
शृङ्खला — अमलिका — शृङ्खला — वाक्य —  
अविभृत शृङ्खलामुख्य — शृङ्खला — वाक्य — अवधि —  
उच्चारित — शृङ्खला — शृङ्खला — अवधि — अवधि —  
वाक्यी शृङ्खला — अवधि — उच्चारण — विवरण अमलिका —  
शृङ्खला शृङ्खला — अवधि — अवधि — वाक्यवाच  
शृङ्खला शृङ्खला — अवधि — अवधि — अवधि —  
शृङ्खला शृङ्खला — अवधि — अवधि — अवधि —  
शृङ्खला शृङ्खला — अवधि — अवधि — अवधि —  
शृङ्खला शृङ्खला — अवधि — अवधि — अवधि —  
शृङ्खला शृङ्खला — अवधि — अवधि — अवधि —

ଲକ୍ଷ୍ମୀପୁର ମହାବିଦ୍ୟାଳୟ ଲକ୍ଷ୍ମୀପୁର

ସ୍ଵରଗୀୟ ପତ୍ରିକା ପତ୍ର

ଇମିଟି : - ୧୯୮୯

ନାମ : - କୁଞ୍ଚଳା ଶାହେଜାଂ

ଶ୍ରେଣୀ : - ପ୍ଲଟକ ତୃତୀୟ ସାମ୍ବାନିକ

ଶୋଳନ୍ତିକା : - UA - 211 - 101 - 0073

ପଞ୍ଜୀୟନ ଟଙ୍କା : - 2103209

କାର୍କତ : - ASM - SE - 3014

## ଶାକ ଆର୍ଦ୍ର ପୁଣ୍ଡର କାଷିତୀ

ଏମନ ଗର୍ଭିତ ଏଜଳି ବିଶିଶ୍ଵା ମାତ୍ର ଆର୍ଦ୍ର ଦୁଇନ  
 ପୁଣ୍ଡର ଆଷିଲ । ଲୋକ ଦୁଇନ କାର୍ଯ୍ୟ ମାକୋଡ଼େ ତାତ୍ତ୍ଵ  
 ଗର୍ଭକୀ ବିଶିଶ୍ଵା ସମ୍ମ । ମାତ୍ରେ ସମ୍ମତ କଷ୍ଟ କରି ଲୋକ  
 ଦୁଇନଙ୍କ ଜାତେ ଦୀଘଳ କବେ । ଲୋକର ଘରତ କାମ  
 କରି ପୁଣ୍ଡେ ଲୋକ ଦୁଇନଙ୍କ ସ୍ମୃତ ବୀଖିଛିଲ । ଏହୋ  
 ଅଗ୍ରମ ଅନ୍ତରେ କରିବ ଦିଯା ନାହିଁ । ଲାଗେ ଲାଗେ  
 ଲୋକ ଦୁଇନ ଆର୍ଦ୍ର ହିଲ । ଜାତେ ଲୋକାଜନ ଆର୍ଦ୍ର  
 ବନ କରିବ ପରା ହିଲ । କର ଲୋକାଜନ ଆର୍ଦ୍ର  
 ହେବେ ଯାଦିଓ ତୈତ୍ତିର କାମ ବନତ ଉନ୍ନାନ ମନ ନାହିଁ ।  
 କର ଲୋକାଜନେ ଛାବି ଚାଁଦି ଧୂର ଭଲ ପାଞ୍ଚିଛିଲ ଆର୍ଦ୍ର  
 ଶୁଣିଯା ଶୁଣିଯ ଛାବି ଜାକିଛିଲ । କର ଆହେବେ  
 କାମ ବନ ରକରା ଥାଏ ଆର୍ଦ୍ର ଗଭେକେ କିନ୍ତୁ  
 କରିବିଲୁ ବିବାହ ଆର୍ଦ୍ର କାନ୍ଦା କାନ୍ଦା ଭାନ୍ତି-କରିବିଲୁ  
 କର ମାଜତ ହାତି କାଦିଯା ହାତିଲେ କରିବିଲେ । ମାନବେ  
 ଲାଗେ ଲାଗେ ସମ୍ମ ବାଢିଯ କରିବିଲେ । ଆର୍ଦ୍ର ଘରର  
 କାମ କାଜଦ୍ୟୋଷ କରିବିଲୁ ସମ୍ମତ କଷ୍ଟ ହୁଏ ।  
 ଆର୍ଦ୍ର ଲୋକାଜନ ପ୍ରୋପ୍ରବୟାପ୍ତ ମୋହା ଥାଏ ଆକେ

ଦୁଇ ବିହାର ସମ୍ବା ପିତା କର୍ମଚାଲ । ଆଖ ଶୀର୍ଷିଛିଲ  
ଶୋଭାବୀଜନୀ ଘରମନ ଭଲକ ଚନ୍ଦ୍ର ଦୁହୋ ଧୈ  
କର୍ମଚାରୀଙ୍କର ଆମେତ କାଜିଯା ନନ୍ଦୀ ମିଳା ପ୍ରିଣ୍ଟିଂ  
ବୀମିଯ ଆଖ ଶୋହୋ ଭଲକ ଘଞ୍ଜ କରି ବୀମିଯ ।  
ଓର୍ବାବେ ଏମନ ଗୋରବ ଏଜନୀ ଶୋଭାଲୀ ଜାତି ମାକେ  
ଜାତିର ଲବାଜନକ ବିହାର ପାଇଁ ଦିଲ । ବିହାର  
ପତର କୈପିଦିନମାନ ପିଛତ ଆଖ କୈପିକେହେ  
ହେବୁ କାଜିଯା ହେଲେ କର୍ମଚାଲ । କାରପ ପଞ୍ଜିଯେ  
ଦୁଇକ ନନ୍ଦ ଶିଶୁର ସମା କୈ ମାକେ । ଆଖ  
ମନ୍ଦ ଅନ୍ଧେକ ଆଖ ମାକକ ଭଲଦ୍ଵାରେ ମାବଲେ  
ନିଦିଯୁ । ଏଦିନ ଜାତି ଲବାଜନ ପତ୍ରିକ ସମା  
ଶରି ମାକକ ଆଖ ଅନ୍ଧେକରକ ଘରର ପରା  
ଉଲିଯାହୁ ଦିଲ । ଆକେ ଶୀର୍ଷିଛିଲ ଘରତ ଶୋଭାବୀ  
ଆଲିଲେ ଲଙ୍ଘି ଆଖେ ଘରମନ ଭଲଦ୍ଵାରେ ଚନ୍ଦ୍ରଲୀ  
ବାହେ କିନ୍ତୁ ଦୁଇ ତଥ ଓଲୋତା ହେ ହେଲା ।  
ଆଖ ଲବାଜନ ଦୁଃ ମନ୍ଦରୁ ମାକକ ଲଗତ ଟେଲ  
ଘରର ପରା କୋଟି ଗଲା । ଘରର ପରା କୋଟି ମନ୍ଦର  
ମନ୍ଦମତେ ମାକେ ଝନତ ସବ କଟ ପାଲେ । ଶାତ

এন্টে বাজারে কৈ মাকড়ে সুলিয়া মেঝা বাবে  
এজন আছন্দে হৃতির ঘৰুল কৈ গল আৰু আঁচি  
আতিক্রম কৈয়াতে আকিয পাৰিব সুলি ক'লে। কেবি  
আৰুহজন বৰ তল আছিল। একটি আৰুহজনৰ  
কোলো আতি সন্তান লাছিল। আৰুহজনৰ পঞ্চি ও  
বহুত মৰমীয়াল আছিল। আৰুহজনৰ পঞ্চিৰে  
বহুত যৱ কৰি আৰু প্ৰত্ৰিকক ভাত মাবীল দিল।  
মাত্র কৈ লোৱাৰ পিছতে আৰুহজনে হৃতিলোকৰ  
কিয় একৈক সন্ধা সুলি ক'লে। লৰাজনৰ ঘৰৰ  
ককলো কথা শোভি পাতি আৰুহজনৰ আগত  
পিণ্ডি ক'লে। লৰাজনৰ কথা শোভি আৰু মিঠাতিৰ  
দুধ সুজিৰ পাৰিল আৰু আঁচিৰ পৰা তোমালুক  
দুয়ো মোৰ ঘৰাত আকিয পাৰিব সুলি ক'লে।  
আৰু আকিবিল এজ কোঢ দিল। পিছদিম আতিপূৰণ  
কেতু দেখি লৰাজনৰ ক'তি ক'বি ক'ক ক'ক ক'ক সুলি  
চিঙ্গ আ'ল বাঁশি আছিল। এজতে আৰুজনু কি  
সুলি সুলি সোৰিত লৰাজনৰ ক'লে অশি আঁচিৰ  
পৰা ক'ক ক'বি লাগিব ন'ইল মোৰ আৰু  
কোঢ জৰ সুলি ক'লে। আৰুহজনু ক'জ লৰাজনুক

ଲଗଡ ଚିଲାକି କବାଳ ଦିଲେ ଜାର ନକଲୋବେ ଲଗଡ  
ମିଳି କାମାତ୍ରାବ କବିବ ବୁଲି କଲୁ । କର୍ମଜାବିରାକଲକ  
ଆତିପୁରୀ ॥ ୧୧ ସଜାତ ଶା. ମିଚାନ୍ତ ମୌଖିଲେ ଦିନ୍ଦୁ ଆର୍  
୨ ସଜାତ ଭାତ ଦିନ୍ଦୁ । ତ ଲୋକଙ୍କୁ କାନ୍ଦୁ ଜାହାର  
ଲଗଡ ଦିଯା ମିଚାନ୍ତମିଳି ନିଜେ ଅଲପ ମାତ୍ର ଜାହାର  
ଅଲପ ଆକର୍ଷ କାବଣେ ଟୈ ଆହେ । କାନ୍ଦୁ ଏତୁକେ  
ଅଳ୍ପ ଦେଖି ବାକି କର୍ମଜାବିରାକଲକୁ ଏଦିନ ଶୁର୍ବିଲେ  
ଛୁମି କାନ୍ଦୁ କାନ୍ଦୁ ଏତୁକେ ମିଚାନ୍ତବୋର କାବ କାବଣୁ  
ଟୈ ଘୋରା ଘରତ ନର ଭାସୁ ଭାସୁ ଆହେ ନେକି ।  
ଲୋକଙ୍କେ କଲେ ନାହିଁ କିମ୍ବା ମିଚାନ୍ତବୋର ମାବ କାବଣୁ  
ଟୈ ଯାଇ । ଲୋକଙ୍କୁ କଥା ହାତି କର୍ମଜାବିରାକଲଙ୍କିନ  
ଜାଚିବିତ ହେଲ । ଆର୍ ଲୋହିଲେ ସ୍ଵର୍ଗିଲେ ଏତି ଏଜନ୍ତା  
ମାତ୍ରଙ୍କ ଆହେ ମିଯ୍ବ ନିଜେର ଭଗବ ଗୋରା ବଞ୍ଚିମିଳି  
ମାକର କାବଣୁ ଟୈ ଯାଇ । ଏତନ କର୍ମଜାବିର୍ଯ୍ୟ  
ଶୁର୍ବିଲ ଛୁମି ଗୋମାର ମାକ ସମ୍ଭାବ ମରନ୍ତ କରା  
ଆଗେ ନ । ଡେଟିଯା ଲୋକଙ୍କେ କଲେ ତ ମାତ୍ର ଗୋର  
ମାକ ସମ୍ଭାବ ମରନ୍ତ କରିବେ ନାହିଁ ଆହେ ଆମାର  
କାବଣୁ କବା କହିବୋର କଷ୍ଟ ପାଉବା ନାହିଁ କ୍ଲେମ୍ବିଯାରେ

କୁଣ୍ଡ ମାକ ସଥିତ ମରମ କରେ ଆଶ କମାଯ ଝୁମତ  
ଶ୍ରାବିଷିଳ କୁଣ୍ଡା କରେ ଆଶ ଜେମାଲୋକେଟ ନିଜର  
ନିଜର ମାକକ ଜେତିଆତ କହି ନିଦିଶା କମାଯ ଝୁମତ  
ଶ୍ରାବିଷା । ଏତ୍ତିକେ କୈ ଲୋଜାତ୍ର ଆକର୍ଷ ବିଷୟ  
ଶୁଣିଯାକେ ବୁଜାଯ ମିଯ ସିରିଲେ । ଆ ଛଳ ଆମାର  
ଜୀବନର ଅମମ ଶବ୍ଦ । ଆଜି ଆମି ଆର କାବଣେ  
ଏହି ପୂର୍ଣ୍ଣଶ୍ରୀଭବନଲେ ଆପିଯ ପାଖିଜ୍ଞା । ଏହି ଶୁଣିଯା  
ଜଗତଭନ ଦ୍ରେଷ୍ଟିଲ ପାଖିଜ୍ଞେ । ଆର କମାନ କୋଣେଟ  
ପ୍ରସ ନୋରାବେ । ଆହେ ଆମାକ କରିବେ ପରା ସଥିତ  
କହି କାହି ଜରେ ଦୀଘଳ କରେ, କରନ୍ତେ ଆମାକ  
ଥଳ ଥଳ- କମା ଶିକ୍ଷାୟ ଆଶ ଅକଲୋତ୍ତକେ ଡାରେ  
ବଢ଼ିବୁ ଥଳ ମାର ମରମ ଯିତ୍ର- ଚାହି ଆଶ ପରା  
ପାଞ୍ଚ । ମୋଟିକେ ମଶୋଦିଷ୍ଟ ହଗନାର ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣଙ୍କ ନିଜର  
ପରି ନିଚିନ୍ଦିକେ ମରମ କାହିଛିଲ । ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣଙ୍କ କେବଳ  
ଆକର୍ଷ ପରା ମରମ ପୋରା ଲାଇଲ ଆକ ଯାତ୍ରାଧାରୀ  
ଆମିଦ ମରମ କାହିଛିଲ । କିନ୍ତୁ ବଠାଗ କମାଜେତ  
କିଛିମାନ ଲୋକ ଆର ମରମ ପାଖିଜ୍ଞ ଯଦିତେ ଡାରେ-  
ଦୀଘଳ କୈ ଆକକ ମରମ ଦିଯା ଲାଗି ରାଜ

মই মাক বঞ্চি মৰম কৰে আৰু কদায় কুণ্ঠ  
শান্মিয়ল কৃষ্ণ কৰে আৰু ত্ৰেণালোকেও গিৰিষ  
গিৰিষ মাকক কেতিয়াও কৃষ্ণ নিৰ্মিকা কদায় কুণ্ঠ  
শান্মিক। এজনকে কৈ ল'বাজ্জু আৰু বিষ্ণু  
বুলীয়াকে বুজায় দিব থীৰিলো। আ ছল আৰু  
জীৱনৰ শেখৰ শব্দ। চাঁচি জাঁচি আৰু কাৰণে  
এন্তু পুনৰ্মুণ্ডনলৈ আঢ়িয পৰিবাঞ্চ। এন্তু বুলীয়া  
জগতভৰণ দৈনিয়ল পাইছো। আৰু কমান কোনেও  
বুৰ গোৱাবে। আয়ে আৰু কৰত্বে পৰা বঞ্চ  
কৃষ্ণ কৰি জড়ে দীঘল কৰে, কৰত্বে আৰু  
বল বল কৰা শিকায় আৰু বকলোতকৈ তাঁৰ  
বস্তুলৈ ছল আৰু মৰম যিত্ব জাঁচি আৰু পৰা  
পাঞ্চ। যোনিকে মশোদাষি হুগুৱাৰ শীকৃষ্ণক গিৰিষ  
পৰে লিচিনীকে মৰম কৰিছিল। শীকৃষ্ণকৈ কেৱল  
আৰু মৰম পৰা কৰান পোৱা নাছিল আৰু মশোদাষি  
আৰু মৰম কৰিছিল। ফিল্ট বৰেণ্যান কমাজ্জে  
কিছুমান লোক আৰু মৰম পাইছে যদিগুৰু তাঁৰে  
দীঘল কৈ আৰু মৰম মৰম দিয়া নাপি কেৱল

ଦୁଃଖେ ଦିକ୍ଷେ । କାରଣ ଶ୍ରେଷ୍ଠମନ୍ତ୍ରମାନ  
ଚିରି ନାପାଯ ଆରତ ମନ୍ତ୍ର ଅବ୍ୟୋ ହେ ଏକହୁବ୍ରାନ୍ତି  
ମାତୁମୂର୍ତ୍ତି ମନତ ଏଣ୍ଟ ଏଠ ସିଦ୍ଧାନ୍ତ ଉପ୍ରେସ୍ତିତ ହୁଏ  
ଲାଗେ । ମାତ୍ର ହୁଏ ଯିମାନେ ପରା ଯିମାନେ କାରଣ  
ଦିଖା କଥା ପରା ଯିମାନେ କାରଣ ଲାଗି ଯିମାନେ  
କାରଣ ପାରା । କାରଣ କାରା ଏଠ ଆଶୀର୍ବାଦ ଶ୍ରେଷ୍ଠ  
ମାତୁମୂର୍ତ୍ତି ଜୀବନ ବୁନୀଯା କରି ଦିବ ପାରେ, ମାତ୍ର  
କ୍ରୋଡ଼ିଶାଙ୍କ ଦୁଃଖ କଷ୍ଟ ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ଆରତ କାରା ଏଠ  
ଆଶୋପେ ଶ୍ରେଷ୍ଠ ଜୀବନ ମାତୁମୂର୍ତ୍ତି ସିଂହ କରି  
ଦିବ ପାରେ ।

ଲକ୍ଷ୍ମୀ ପୁସ୍ତ ମର୍ମାଯିଦ୍ୟାଲୟ ଲକ୍ଷ୍ମୀ ପୁସ୍ତ

ଆଲୋଚନା ଚାର୍ଟ

ନାମ :- କଂକଳା ହାଜି

ଶୋଳନ :- MA - 211 - 101 - 0073

ଶୈଖି :- ଚତୁର୍ଥ ପ୍ରାଣୀଯିକ

ବିଷୟ :- ଭୋଗୀକରଣ ଗଲ୍ଲ ( ଶୁଣି )

ପଞ୍ଜୀୟନ ନଂ :- ୨୦୧୩୨୦

କାର୍ଯ୍ୟ :- କୃଜଳିକୁଳକ ଆସ୍ତିତ୍ବ ( ASM-SE-  
୫୦୫ )

୦୨୬୦୫୧୨୩  
୨୬୦୫୧୨୩

## ଶୁଣି

“ଅ” ମୁଦ୍ରାରେ ପିତୃଙ୍କଳେ କିମ୍ବା ତଳତ ମୋଲି  
ମାର୍କ୍ଷାକ୍ରମ କଲଗ୍ରହଜୋପାଶ କଲପାତ ଏମିଲାତ ମିଥ୍ୟ  
ହେଉ କିମ୍ବା କାପୋର ପିନ୍ଧା ମାନୁଷ ଏଡିନୀଯେ ଝୋଲେ  
ଚାହିଁ ମୋର ମାତ୍ର ଆଛିଲ ।” ଜୋନାକୀଯେ ଦୌଷି  
ଆସି ପାଦଘରତ କାହା କାହିଁ ମରା ମାନୁଷ ଫିଲେ ।

ମାତ୍ରେ କର୍ମାଣ୍ଡିଆ ଅବଧି ନାହିଁବାରେ ନିଲେ ଜୋନାକୀକ  
କିଲେ, “ ତାହା ଏକାଧିନିଷ ପଥ ଯାଚାନ, ପଢାତ ସଂଗେ ।  
ପିତୃପତ୍ରେ ହାଲ ଯାହିଁ ଆସିବ ପଥ ହେବେ, ତାହା ପଢା  
ଲେବେମିଲେ ଭୋକ ଶୁଭେବେ ନେବେ ।”

ଜୋନାକୀ, ମାନୁଷ ଦୈତ୍ୟବର ଏକମାତ୍ର ଜାତାନ ।  
ଜୋନାକୀର ଭାଗ୍ୟ ଭାଲ ଆଛିଲ ତାହା ପୁରୀର ଉପରେ  
କାରିବୁଲ ପାଲେ କିନ୍ତୁ ଜୋନାକୀର ଆଗତ ଭଣ୍ଡ  
ମୋରା ଭିନ୍ନିଟାକେ ଜାତାନ କେତୁବା ଅରହାତେ ଅଞ୍ଚାତ  
କାରନତ ହୁଅୟ ଶୁଭତ ପାଇଲ । ପାର୍ବତୀ ।

ଦୁଦିନମାନର ପିତୃ କଥା, ଜୋନାକୀଯେ କିମ୍ବା  
ଜୋପାଶ ତଳତ ଶାଲିଘର ମୋଲି ଆଛେ । ପିତୃ  
ଜୋନାକୀଯେ ଦେଖା ପାଲେ, ଦ୍ୱିଦିନ ଦେଖା ମାନୁଷଙ୍କରୀ  
ପୁନର କଲପାତ ମିଳାଶ ଓପରତ ମିଥ୍ୟ ହେଉଥିଲେ

ମସି ଲାଗି ଚାହିଁ ଆଛେ । ଶିକ୍ଷେ ଜୋନାକୀୟେ ବିଭେଦ  
ଚର୍ବେବାର ମାନୁଷଙ୍କଙ୍କିଟିଲେ ଭାସୁକ ହେ ମସି ଲାଗି ଚାଲି ।  
ଜୋନାକୀୟେ ଦେଖା ପାଲେ କିଲା କାଜ ପିଣ୍ଡି; ଏକା  
ଶେଷପୁ ଶୈତାପରା ଶୁମସ ମାନୁଷଙ୍କଙ୍କିର ଭାସରା ଓଟି  
ଘେନ ଆଶ୍ରମ ଚକ୍ରକେନ୍ଦ୍ରୀ ତିର୍ଯ୍ୟବିଶ୍ଵାସ ଆଚିଲି ।

ଜୋନାକୀୟେ ମାତ ଲଗାଲେ, “କୋନ ଜାପୁନି ?”

ମାନୁଷଙ୍କଙ୍କିୟେ ଶୁଭେଷେ ଏକୋ ନମାତି ଲେଖିବା ଆଶ୍ରମ  
ଦୀଏଳ କମ୍ବ ଆତମନ୍ତ୍ରକ ଜୋନାକୀକ ହାତ ବାଡ଼ିଲି  
ଦି ମାତିଲେ । ଜୋନାକୀୟେ କମ୍ବ ସଙ୍ଗର ପରା ଡାଢି  
ଆଶିଥାତ ଲାହେ ଲାହେ ପିଛୁବାହି ଆହିଲ ଭାବ  
କିନ୍ତୁ କମ୍ବକୁ ଧିନ୍ତି ମାକର ଉଚ୍ଚୀଲ ଦୌରୀ ଗଲି ।

ମାକର ଉଚ୍ଚ ପାଦ ଜୋନାକୀୟେ ଫିଲେ, “କ୍ଳା ମିଦିଲା  
ଦେଖା ମାନୁଷଙ୍କଙ୍କିକ ଏହିମାତ୍ର ମହି ଜାକୋ ଦୈମିଙ୍ଗେ ।”

ଏକର ଜୋନାକୀର ମାକ ଚିନ୍ତାତ ପାରିଲ, କି ହେବୁ  
ଜୀଘେବର ! ମାକେ ଜୋନାକୀକ ଫିଲେ,

‘ତୁ କି କି ଯେ ଦୈମି ଥାକ ନଥ୍ୟ ! ସିଲଗେନ  
ଚାନ୍ଦିଗ କଲଗଛଜୋପାତ ଲେ କି ଆଛେ ।’

ଜୋନାକୀ ଆଶ୍ରମ ମାକ ସରର ପିଛୁବାହି ମକା  
କଟାଳ ଜୋପାର ତଳିଲେ ଗଲି ଆଶ୍ରମ କାଷାତ୍ ସମ୍ମ ମକା  
କଲଗଛ ଜୋପାଲେ ଚାଲ । ଦେଖା ପାଲେ ଏହା ଆଶ୍ରମ  
ଦେଶା କାଟାବାହି କଲପାତର ଉପରତ ଡାଢି କା କା

ইকে চিঞ্চোৰি আছে। জোনাকীয়ে কোৱা গড়ে সেখু  
গচ্ছ জোপাত মাঝুতজনী নাচিল, এজোনাকীৰ মাকৰ  
মৎ উচিল। মাকে জোনাকীক বলেচতুর দেশুৱাবি  
সেক্ষে চাইৰ পৰা পিছুবলে টৈল আদিল।

অন্য এদিন জোনাকীয়ে স্কেট কীচাল জোপাৰ তলত  
থেলি আছে, তেলেতু জোনাকীৰ পিছুবলৰ পৰা  
ভাইৰ মাক আঁচি কীলে "ব'ল পুঁঁধুৰীৰ জাল যাও,  
বাতিপুৱা যাণেৰে জালমন পাঁতি টৈম- আপিছে শাচ  
লাগিয়ত পাথৰে, পনি কম আছে যৌত্যা চাষ আহোঁ  
ব'ল।"

জোনাকীৰ মাক চাওঁকাউ গ'ল, পিছে পিছে আগবাঢ়ি  
ল জোনাকী-। এটা সাময়ত কিঁতি টৈল ঘৰৰ ধৰিৰ-  
পিছুবলে মকা পুঁঁধুৰীৰ পাৰ পালোচা। মাকে  
বপনাপিছ জোনাকীৰ জালে চাষ কীলে, "উৰ  
পাৰত মাক। পনিৰ জালে নাপিবি।"

**মোগলান্ম** আছেৰে কোঁচি টৈল জোনাকীৰ মাক  
পনিৰ নাপিল আৰু জালমন একালৰ পৰা চাষ  
ব'ল। তেলেতু জোনাকীৰ মাকে জালত এটা জেৰা  
আছ লাগি মকা দোমিবলে পালে, জলপো পলমা  
হকুবাকু আৰু মাছটা জালৰ পৰা চাতৰাউ জোনাকী  
মাপিলো, "জলপঞ্চান পনিৰ পনীলে নাপি আৰু,  
উৰ এক মাছটা ধৰি মাক আৰু গুপ্তি জালৰ

বাকী অংশত কি লাগিছে চাঁচ্চ ।"

জোনাকী পানীলে নামি গ'ল, জোনাকীৰ ভৰিমন তিতিল হৈ মাঝে ভেনেতে ভাস্ব ঘৰৱ ক্ষ' জালৰ পৰা দেউগকৰ চিক্ৰে শৰণ পালে, "জোনাকী ... ক'ত আছ চৰ্ষি ।" দেউগকৰ চিক্ৰে শৰণি জোনাকী দেউ প্রান্ত মৰাকী ব'ল । ভেনেতে জোনাকীৰ দেউগকুন্দা আৰি পুঁঁধৰীঠোৰ পাৰ বাস্ব জোনাকীক পুনৰ মাতিলে ভেতিয়া জোনাকীয়ে দেউগকুলে বুলি পিছলে ঘূৰি জালে ।

" তৰ্ক পনিত নামিছ যে ? পাষুলে জাপ জাখ জাঁচ কাঢ এতিয়াৰ্থ ।" জোনাকীৰ দেউগকে জোনাকীক ক'লে ।

জোনাকীয়ে ক'লে, " তোক আয়ে হে লগ বৰি জানিছে ঝঁয়ালে, ক'ন্ত আপিছোঁ নৈকি কিবা ।"

জোনাকীৰ দেউগকৰ ঘান্তে খ'ল উচিল, " তৰ্ক মিছা কথা ক'বুলে জেগা পোৱা নাহি ? মালোৱা এচাৰি চীমি পাৰ্বতি ? ক'ত ক'ন্ত তোক মাবে পুঁঁধৰীলে লগ বৰি আনিছে ! মাৰে জেন ঘৰতে আছে ।"

দেউগকৰ কথা শৰণি জোনাকীয়ে আচৰিত হৈ  
লগাতে পিছলে ঘূৰি জালে জাচ জাখ আচৰিত হ'ল  
কথণ তস্বি দেখা পালে ত্ৰিমান পৰে জাল মঞ্চ  
থকা অস্বৰ ক্ষমক পুঁঁধৰীমেত জাঁচ । ক'লে গ'ল  
অস্বৰ আক ।

জোনকীয়ে কান্দিয়ে লে জাবন্তু বৰিলে জাৰঃ কান্দি  
কান্দিয়ে পুনৰ্বীটৈৰ পৌষ্টিলে উচি জাপ্তিল। লগত  
দেউগৱে গৱৈক মাতত বৰি পৰিলে লে জাপ্তিল।

ঘৰ জাপ্তি পৌষ্টি জোনকীৰ দেউগৱে জাঁচৰ শালত  
বাস্তি মৰা মাকক গালি দিয়েলে জাবন্তু বৰিলে,  
“অলপমান জাৰা ছোৱালীজনীক ! জাৰ ক'ত গৈছে কি  
বৰিচু। ম'ষ্টি আজি আলঘায় জাপ্তি সোনকালে ঘৰ  
পালে বুলিবে, নৰ'লে তেমাব অমনযোগিতাৰ বাবেই  
আজি ছোৱালী পনিত পৰি মৰিল অঘ !”

জোনকীৰ মাক জাচৰিত হৈল, জোনকীৰ পিচিত  
টকা বিজি মৰি গৱৈক বৰিক দি ক'লে, “কুলেই-  
মৰিবলে গৈছিলি পুনৰ্বীলে ? জাৰ যাবি তন ?”

জোনকীয়ে কান্দি কান্দি উওৰ দিল, ‘কিন্তু  
মা ~~মোৰুণে~~ জাপুণিয়ে লগ বৰি লে গৈছিল।’

জোনকীৰ বৰা কেনি জোনকীৰ মাক জাচৰিত  
হৈল। মাকে দেউগৱে মাতত বৰি জানি কান্দি  
অলপ জাঁচৰাই জানি ক'লে, “হেৰী, দুদিনকৈ  
জোনকীয়ে ঘৰৰ পিছফালে আল্প এজনি দেৱা  
বুলি কুকছে। আনুভুজনীগোলে বলগতৰ বলপাতত  
উচি মৰিব পাৰে। কিদিনা গৱৈক মাত বাড়লি  
দি আতিক্ষেত্ৰে যোলে, অম্বাত বৰ্মাটো ম'ষ্টি ব'মান

ମୁଣ୍ଡ କରା ନାହିଁଲେ କିନ୍ତୁ ଜାଗିବ ଘଟନାଟୋଟେ  
ଚାହିଁ ମୋର ବିଦା ଯେଉଁଳଗ ସେଇ କୁ ଲାଗିଛେ ।”  
“ଏବା . . . ତୁ ମି ଚିକିତ୍ସା କୈବା । ଏହି ଡାକ୍ତର ମୋର  
ଆଗତତେ ଆମି ତିର୍ଣ୍ଣିଲାକେ ମନ୍ତାନ ଦେବବାବଲଗ୍ନିଯା  
ହେବେ । ଆଖି ଏହିର ଲଗତ ଜାଗି ଏବେବୁବା ଘଟନା ।  
ଅପରାଧୀ କୋଣୋବା ଅପଶମିତା ଚକ୍ର ପରିଷ୍ଠେ ଆମାର  
ପ୍ରସମନତ ।”

ମେଘନିମା ନିଶା ଅପମାନି ଜୋନକିର ସଞ୍ଚତ ଜ୍ଵର,  
ବିଚନତ ଓ ମରି ମରି ଜୋନକିର କାଷତେ ତଥିର ମାକ  
ସାଥି ଭାବେ ଆହେ ଆଖ ଦେଇଗଲେ ଜାପିକେଲମନ ଲୈ  
ଭୋଲାବାଗ କରି ପାଉଡ଼ିବାରେ ସବଲୈ ଲୈବାଲିବିକେ ଟେଙ୍ଗେ  
ଫିଜାନିବା ଜ୍ଵରର ଟୁପି ଏଣ ଦସରା ପାପି ।

ହିଚାତେ ଜୋନକିର ମାକେ ଲେମର ପୋଥରତେ  
ଦେଖିଲେ ଜୋନକିର ମୁଖମନ ବଜେ ଝିଲ୍ଲି ଗେହେ  
ଆଖ ଲଗତେ ଜୋନକିଯେ ତୁଳ ବକା ଆଶମ୍ଭୁ କାଷିତ୍ତ,  
ମୋର କିନ୍ତୁ ମାରି ପେଲାପି ପୂର୍ବି ଭଲୋପି, ମୋର  
ପରା ମୋର ଲାର୍ଗିଲେକ ଦୂର କାଷିଲେ, ଛୁମିଛୁମି କୁମତ  
ନାହିଁ ଯୌତ୍ତ୍ୟା କାକେ କୁମତ ମାକିବ ନିର୍ମିତିଙ୍କ ମନ୍ତ୍ର ।”



“কোন তরু ? কৰ পৰা আবিষ্ট ?” জানীকে কলে ।

“ইন্দি কৰুৱা গাঁওৰ ধনৰ মাছুৱ, এ বছৰ আগতে  
জোক মাৰি পুতি ঘনে । এতিয়া সেৱা পোতা মাছুলো  
মৰিল । কি কৰিবি জানি তরু ?” জোনাকীৰ গাত  
লাগি মকা সেৱা প্ৰেতাহাৰি কলে ।

“মন্দি জানি কি কৰো নকৰো কেৱলজো পিছে,  
তোৰ হাতত দুজি বাতা আছে । এগি বাতা সৰি তোৰ  
কোনোৱা গছতে বান্ধিল চাৰ জানজো বাতা তোৰ  
শুক্রি । এতিয়া ক তোক কেৱলজো লাগে ?” জোনাকীৰ  
গাত মকা প্ৰেতাহাৰ উদৰ্দৰ্শি তাৰিখু কলে ।

জোনাকীৰ গাত লাহু মকা প্ৰেতাহাৰ বিষ্ণু পৰ  
ভৌন তে বল জাৰু তাৰ কলে, “মোক শুক্রি দিয়ু  
যদি পাৰে । ইন্দি গাঁওমনৰ বিলৰ পাৰত মকা  
আগত গছদোৱাৰ কেৱলজুলাজোৰ ভলতে মোক পোত  
হৈ আছে । সেৱা চাহিব পৰা মোক মানি-  
ডালিয়াহি লৈ মোৰ পুত্ৰ মুহূৰ্তি মোক শুভৱি  
কৰোৱাই মোক সৎকাৰ কৰক, ইন্দি শুক্রি পাৰ ।  
এতিয়া চাগে মোৰ লৰাও বৃদ্ধা হৈল ! সাহচৰ্ব  
জোৱাদ জলকে নাপত্তিতে মোক প্ৰসা কৰিবি পুতি  
ঘনে ! মন্দি যি নাপালো দেয়া যেলেগে কিয়-



